मूल्य : 25 रुपये
अप्रैल - जून, 2022

वर्ष : 11, अंक : 44

नर्मदा समग्र

नदी उत्सव
Celebrating Rivers

नर्मदा समग्र मंथन बैठक/वर्ग के समापन सत्र में आदरणीय श्री सुरेश सोनी जी ने कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया।

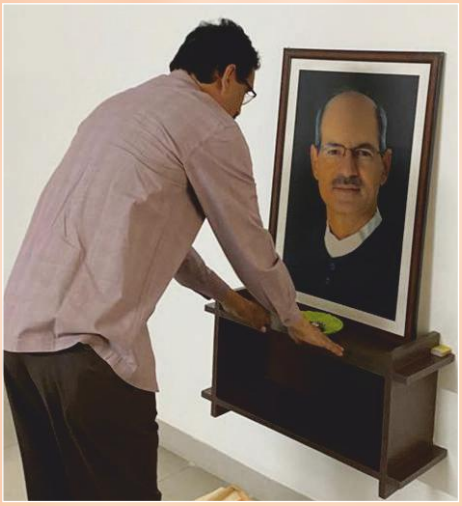

पद्मश्री पोपटराव पवार जी अपने भोपाल प्रवास के दौरान 'नदी का घर' पधारे। उन्होंने स्वर्गीय अनिल माधव दवे जी का स्मरण करते हुए उनके चित्र को नमन कर श्रद्धांजली अर्पित की। नदी उत्सव 2022 में उनका वेब कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उद्बोधन दिया था। जिसके लिए स्मृति चिन्ह देकर आभार प्रकट किया।

नर्मदा समग्र के समन्यवक मनोज जोशी जी और लालाराम चक्रवर्ती जी को महामंडलेश्वर श्रीश्री 1008 श्री ईश्वरानंद महाराज (उत्तम स्वामी जी) एवं उनके साथ सहभागी हुए 182 परिक्रमावासियों की माँ नर्मदा पद परिक्रमा के सुव्यवस्थित संचालन और सर्मपण को उल्लेखित करते हुए उन्हें शाल, श्रीफल, और प्रशस्ति पत्र देकर म.प्र. के माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा सम्मानित किया गया।

नर्मदा समग्र

का त्रैमासिक प्रकाशन

वर्ष : 11

अंक : 44

माह : अप्रैल-जून 2022

संस्थापक संपादक

स्व. अनिल माधव दवे

संपादक

कार्तिक सप्रे

संपादकीय मण्डल

डॉ. सुदेश वाघमारे

संतोष शुक्ला

आकल्पन

संदीप बागड़े/दीपक सिंह बैस

मुद्रण

नियो प्रिंटर्स

17-बी-सेक्टर,

औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल

सम्पर्क

'नदी का घर'

सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी,

शिवाजी नगर, भोपाल-462016

E-mail : narmada.media@gmail.com

@narmadasamagra @narmada_samagra

@narmadasamagra @narmadasamagra

@narmadasamagra www.narmadasamagra.org

इस अंक में .....

जल व जलीय जीवो में विषाक्तता

1.	संपादकीय	05
2.	नर्मदा समग्र की पहल से अमरकंटक में निर्माण...	06
3.	पानी की पदचाप सुनता 'अन-आन्दोलन'	08
4.	वेदों में हमारी पृथ्वी	09
5.	विश्व प्रवासी पक्षी दिवस	11
6.	विश्व मधुमक्खी दिवस	12
7.	माँ नर्मदा भारत की तीसरी सबसे बड़ी नदी	14
8.	नदी उत्सव - 2022	15
9.	नर्मदा अंचल के वृक्ष	22
10.	नर्मदा के जंगल	23
11.	सेवा भावी नारी शशिबेन जोशी	24
12.	विश्व पर्यावरण के दिवस के पचास वर्ष...	25
13.	पॉलीथिन बंधन क्यों ?	27
14.	एकल उपयोग वाली प्लास्टिक (SUP) पर प्रतिबंध	29
15.	एक नमन मेरा भी	30

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल से मुद्रित एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : कार्तिक सप्रे। फोन : 0755-2460754

एक नदी की कथा

मोहन नागर

(लेखक - जल प्रहरी एवं पर्यावरण कार्यकर्ता हैं।)

कभी
नदिया किनारे
पेड़ों पर बैठकर
गाये थे मैंने नदी के गीत
पर समय की धार ने
काट दिए सब
पीपल बरगद पाकड़ आम
नीम कदम्ब जामुन जाम

फिर नाव में बैठकर
कलकल छलछल
निर्मल जल में
बलखाती मछलियों
डुबकती बत्तखों
ध्यानस्थ बकों के बीच
उकेरता रहा मैं
नदी के गीत
धीरे धीरे
जल भी गया रीत

तब
रेत पर बैठकर
वर्षानुवर्ष
गुनगुनाये मैंने
नदी पर मल्हार
क्योंकि
मैं जानता था
रेत के नीचे भी
बहती है नदी की धार
तब
नीलाम हुई
रेत खदान

मैं पत्थरों पर बैठ
गाया करता
नदी के विरह गान

जब
पत्थर भी न बचे
फिर भी मैं नहीं हारा
चट्टाने रही कई दिन सहारा
अब चट्टाने भी फुट गई
सारी आस टूट गई

तब से
किनारे खड़े होकर
चीख चीख
माँग रहा हूँ
बूढ़ी नदी माँ की ओर से भीख

कि
लौटा दो मेरे
पेड़ पानी जलचर
रेत चट्टाने पत्थर
वरना एक दिन
तटबन्ध तोड़कर
मैं स्वयं आऊँगी
जितना उलीचकर
ले गए हो
सब समेट लाऊँगी।

'केवल एक पृथ्वी'

विश्व पर्यावरण दिवस को पृथ्वी को प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग से बचाने के साथ दुनिया में जैवविविधता और वन्यजीवन संरक्षण, जल प्रबंधन, जनसंख्या विस्फोट जैसी कई चुनौतियों से निपटने के लिए मंथन करने के दिन के रूप में देखा जाता है। 50 वर्ष पहले संयुक्त राष्ट्र संघ ने हर वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाना तय किया था ।

50 साल पहले विश्व पर्यावरण दिवस 'केवल एक पृथ्वी' जिस नारे के साथ मनाया गया था। वह पांच दशक बाद भी एक सच है क्योंकि पृथ्वी अभी भी हमारा एक मात्र घर है, और पांच दशक के बाद फिर विश्व पर्यावरण दिवस 2022 की थीम OnlyOneEarth ही है। 2022 में संयुक्त राष्ट्र ने पांच दशक पुराने नारे 'केवल एक पृथ्वी' नारे को फिर से अपना कर सभी देशों पर एक प्रश्न चिन्ह खड़ा किया है।

बीते 50 वर्षों में जो हमने इस धरा को बचाने के लिए प्रयास किए वह नाकाफी सिद्ध होते हैं। हम सभी जानते है कि इस ग्रह को बचाने के लिए जितने प्रयास किए गए उससे ज्यादा नुकसान हमनें इन 50 वर्षों में कर दिया है। देशों ने पिछले 50 वर्षों में इस ग्रह के पर्यावरण को बचाने के प्रयासों से ज्यादा नुकसान पहुंचाने वाले काम अधिक किए हैं।

आज से 50 वर्ष पूर्व जब यह नारा संयुक्त राष्ट्र संघ ने दुनिया को दिया था उस वक्त हमारी पृथ्वी की स्थिति आज से बहुत बेहतर थी। हमारा पर्यावरण 2022 से कई गुना ज्यादा शुद्ध था और हमारे जंगल कई गुना समृद्ध थे। पिछले पांच दशक में औद्योगीकरण में वृद्धि, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई बढ़ते अपशिष्ट एवं प्रदुषण की वजह से पर्यावरण को काफी नुकसान हुआ है। इसकी वजह से अब इकोसिस्टम में तेजी से बदलाव देखने को मिल रहे हैं। हमारे ग्लेशियर पिघल रहे हैं, हमारी नदियां सुख रही हैं और हमारा जैवतंत्र शनै-शनै नष्ट हो रहा है। जीव-जंतुओं और वनस्पतियों की कई प्रजातियां इस दौरान लुप्त हो गई है।

मानवीय गतिविधियों के कारण ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन वैश्विक तापमान को असुरक्षित स्तर तक बढ़ा चुका है। मौसम में बदलाव के कारण बरसात अंसतुलित हो रहा है, कहीं बाढ़ तो कहीं सूखे के हालात उत्पन्न हो रहे हैं। जिस कारण से अनगिनत लोगों पर विस्थापन का खतरा बना हुआ है। प्लास्टिक (विशेषकर सिंगल युज) से होने वाले प्रदूषण के कारण जल, जंगल और जमीन तीनों आयामों को भारी नुकसान पहुंचा है।

अगर हम इन सभी बातों पर ध्यान देंगे तो सार यही निकलता है कि 50 वर्षों में हमनें इस पर्यावरण के संरक्षण के लिए ज्यादा सकारत्मक कार्य नहीं किए हैं। और विश्व पर्यावरण दिवस हर साल मनाऐं जाने वाले एक इंवेट मात्र बन गया है। हमें व्यक्तिगत स्तर पर, समाज और सरकारों के स्तर पर गंभीर होकर जीवनशैली, दृष्टि नीति इत्यादि पर प्रयास करने होंगे। □

नर्मदा समग्र की पहल से अमरकंटक में

निर्माण कार्य पूर्ण रुपेण प्रतिबंधित, माँ नर्मदा का उद्गम स्थल सुरक्षित

अमरकंटक को लेकर कई वर्षों से विशेष कर 2015-16 से जो नर्मदा समग्र के परोक्ष-अपरोक्ष प्रयास आरम्भ हुए उसमें 2022 में एक महत्वपूर्ण प्रगति हुई। जो देश, समाज में एक नयी दिशा का आरम्भ है।

2019 में एक दल बना कर अमरकंटक के परिस्थितिकी तंत्र को लेकर अवलोकन किया गया एवं Findings & Observations Report बनायी गयी। इस रिपोर्ट को केंद्रीय जल शक्ति, मंत्रालय, वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, और मध्यप्रदेश शासन को दिया गया। विभिन्न स्तरों पर प्रयास करने उपरांत अमरकंटक में 24 अप्रैल 2022 को मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुई। जिसमें केंद्रीय पर्यावरण मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव, केंद्रीय जल शक्ति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद पटेल, संबंधित विभागों के म.प्र. के मंत्रीगण, नर्मदा समग्र के न्यासी एवं प्रतिनिधि/कार्यकर्ता, कुछ विषय विशेषज्ञ, प्रशासनिक अधिकारी, इत्यादि उपस्थित रहे।

बैठक में सर्वप्रथम नर्मदा सेवा मिशन द्वारा किये जा रहे कार्यों का प्रस्तुतीकरण किया गया। तत्पश्चात नर्मदा समग्र द्वारा नर्मदा के संरक्षण तथा अमरकंटक क्षेत्र में वर्ष 1980 से 2018 के बीच भूमि उपयोग एवं भूमि आवरण में हुए परिवर्तन से संबंधित शोध पर प्रस्तुतीकरण किया गया। साथ ही फोटो प्रेज़ेंटेशन भी किया गया। जिसमें 1990 का अमरकंटक एवं 2011 से 2022 तक अलग-अलग समय पर विभिन्न स्थानों के तुलनात्मक छायाचित्रों भी प्रस्तुत किए जिसमें हुआ कटाव, निर्माण कार्य, घटता जल, प्रदूषण, इत्यादि सम्मिलित थे। इस बैठक मंस

नदी अनुरागी एवं विषय विशेषज्ञ डॉ. सुदेश वाघमारे, डॉ. तरुण ठाकुर, अधिवक्ता ओम श्रीवास्तव उपस्थित रहे जिन्होंने प्रवास, अध्ययन, एवं प्रस्तुतीकरण में समय-समय पर सहयोग प्रदान किया।

प्रस्तुतीकरण की अगली कड़ी में श्री सुनीश बक्शी, वन महानिरीक्षक, पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन विभाग, भारत सरकार द्वारा नर्मदा नदी के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु एक विस्तृत वैज्ञानिक शोध अध्ययन का प्रस्तुतीकरण किया। तद्उपरान्त कलेक्टर अनूपपुर सुश्री सोनिया मीना ने नर्मदा उद्गम स्थल अमरकंटक में जल संरक्षण एवं सौन्दर्यीकरण के लिए कराए जा रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी दी।

तत्पश्चात केन्द्रीय जलशक्ति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद पटेल के द्वारा अपने विचार प्रकट किये गये, उन्होंने कहा कि विषय विशेषज्ञों की टीम गठित कर नर्मदा जी के संरक्षण एवं संवर्धन के रोडमैप को तैयार करने की आवश्यकता है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन विभाग, भारत सरकार के मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव ने कहा कि नर्मदा नदी मध्यप्रदेश के साथ-साथ अन्य राज्यों की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक जीवन की आधारशीला है। अमरकंटक धार्मिक, पारंपरिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक रूप से हमारे पूर्वजों का अनंत काल से निवास स्थान रहा है। यहां से निकलने वाली नर्मदा जी के जल को संरक्षित एवं संवर्धित करना यह हम सबका कर्तव्य है।

प्रख्यात चिंतक, लेखक एवं पर्यावरणविद् श्री सुरेश सोनी जी ने भी नर्मदा के संरक्षण और संवर्धन के लिए सुझाव देते हुये कहा कि नदी का कार्य निरंतर प्रवाहमान रहना है, नदी में जब तक गति है तब तक जीवन है, नदी की गति खत्म जीवन खत्म, इसके संरक्षण के लिए उन्होंने सुझाव दिए।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि नर्मदा नदी मध्यप्रदेश की जीवन

रेखा है। माँ नर्मदा हमारे आस्था एवं श्रद्धा का केन्द्र है। लेकिन भौतिक रूप से अगर कोई मध्यप्रदेश को देखें तो सिंचाई का पानी, पीने का पानी, बिजली इत्यादि जो कुछ भी देती हैं हमें नर्मदा नदी ही देती हैं। नर्मदा जी हैं तो मध्यप्रदेश है। नर्मदा जी झर-झर, कल-कल बहती रहे, निरंतर प्रवाह मान रहे तथा हमें जीवन देती रहे, इसके लिए कई उल्लेखनीय कार्य किए गए हैं, तथा आगे भी कई कार्य किए जाएंगे।

प्रस्तुतीकरण एवं चर्चा से कई बातें निकल कर आयी, जिनका सार इस प्रकार है - किसी प्रकार के नए निर्माण पर रोक लगाने का आदेश दिया गया। वृहद् पौधारोपण किया जाना तय किया गया। अमरकंटक आवासीय क्षेत्र से गंदा पानी सीधे नर्मदा जी में ना जाए यह सुनिश्चित किया जाएगा। सैटेलाइट सिटी का निर्माण जो की उद्गम से दूर एवं पहाड़ी से नीचे की ओर होगी। अतिक्रमण को लेकर भी कठोर निर्णय लेने हेतु आग्रह रहा।

चर्चा उपरांत बड़े निर्णय लिए गए जो की अमरकंटक में संरक्षण को लेकर बेहद महत्वपूर्ण है जिससे नर्मदा जी और सोन जैसी नदियों पर सीधा सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

बैठक में और भी कई प्रकार के सुझाव आए, जिन्हें अमल में लाने हेतु यथासंभव प्रयास किए जाएँगे। जन भागीदारी के बिना नर्मदा जी का संरक्षण एवं संवर्धन सम्भव नहीं है। यह एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है और समाज को भी इसमें अपनी भूमिका सुनिश्चित करनी होगी। □

गायत्री सावित्री संगम (मार्च 2022)

Assessment of decadal land use dynamics of Upper Catchment Area of Narmada River

Class Name	Area (km²) 1980	Area (km²) 1988	Area (km²) 1998	Area (km²) 2008	Area (km²) 2018
Dense Mixed Forest	18.92 (53.13)	17.79 (49.96)	16.85 (47.32)	14.98 (42.07)	14.78 (41.50)
Sal Mixed Forest	10.65 (29.91)	11.21 (31.48)	11.57 (32.49)	9.90 (27.80)	9.90 (27.80)
Open Land	2.34 (6.57)	2.69 (7.55)	3.01 (8.45)	4.98 (13.98)	5.02 (14.10)
Agriculture	0.29 (0.81)	0.90 (2.53)	0.98 (2.75)	2.78 (7.81)	2.82 (7.91)
Habitation/ Commercial Building	0.21 (0.59)	0.29 (0.81)	0.56 (1.57)	1.54 (4.32)	1.70 (4.77)
Water bodies	3.2 (8.98)	2.71 (7.61)	2.64 (7.41)	1.43 (4.01)	1.39 (3.90)
Total	35.61	35.61	35.61	35.61	35.61

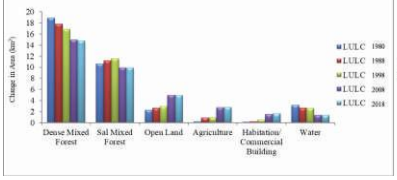

Land use land cover of Narmada river between 1980 to 2018 – by Prof. Tarun Thakur, IGNTU

कपिलधारा

पानी की पदचाप सुनता 'जल-आन्दोलन'

डॉ. शिप्रा माथुर

(लेखिका - दो दशक से पत्रकारिता और पत्रकारिता से जुड़ी, पत्रकारिता में कैंपेन एडिटर, अमेरिका के ग्लोबल स्ट्रेट व्यू अखबार की कंसल्टिंग एडिटर हैं।)

दुनिया की करीब 18फीसदी आबादी संभाले भारत के हिस्से केवल चार फीसद पानी है। यानी पानी के मामले में सबसे भारी तंगी यहीं है। पानी भरपूर बरसता है यहां मगर केवल 28फीसद इस्तेमाल लायक बचा रहता है। करीब 10 फीसद ज़मीन के भीतर पैर रहा है और 17 फीसद के आसपास सतह पर। लेकिन उत्तर पूर्व से लेकर पश्चिम तक 1000 सेंटीमीटर से 10 सेंटीमीटर बारिश का जो फासला है उसके बीच हर इलाके की अपनी तड़प है। कहीं बाढ़, कहीं सूखा, कहीं साल भर की किल्लत, कहीं खारे पानी की दिक्कत तो कहीं बिजली की ज्यादा खपत, खेती और बेहिसाब दोहन की वजह से सबसे कीमती संसाधन पर भार। कुदरत के कायदों से दूर होना तो वजह है ही लेकिन पानी के प्रबन्धन के वैज्ञानिक तरीकों से बेपरवाही भी हमें भारी पड़ी है। इन सबके बीच जंगलों की हिफाज़त में वह रहे नदी, नाले, झरने, तालाब ही आज दुनिया की आधी आबादी की ताज़े पानी की 75 फीसद ज़रूरत पूरी कर रहे हैं। ये इशारा भर है कि जितनी जल्द हम कुदरत से छेड़छाड़ किए बगैर उससे तालमेल में माहिर हो जाएं उतना बेहतर।

नीति आयोग ने साल 2018 से 28 नए पैमानों पर पानी की परख करनी शुरू की है। आयोग की रिपोर्ट ने चेता ही दिया है कि साल 2030 तक 40 फीसदी लोग पानी के भारी संकट से जूझेंगे और 21 शहरों की कोख तो पानी से पूरी खाली हो ही चुकी है। ऐसे में इस मसले पर 'विश्व जल-दिवस' जैसे मौकों का इन्तज़ार किए बगैर 'पांचजन्य' साप्ताहिक ने जब 'जल-आन्दोलन' की मुहिम शुरू की तो हम जैसे कलमकारों-पत्रकारों-अध्येताओं से भी चर्चा हुई। लोक-जीवन और चिन्तन के नज़रिये से नीतियों को समझने की चाहत में सबने जल-परम्पराओं, सम्पदाओं, पानी को लेकर हो रही तमाम नीतिगत कवायदों और समुदायों की पहल को पन्नों में दर्ज करने का साझा बीड़ा उठाया। साल 2030 तक पूरी दुनिया में सतत विकास हासिल करने के लक्ष्यों में पानी का बड़ा हिस्सा है जिसमें साफ पानी और स्व'छता दोनों की बात है। जलवायु और जलीय-जीवन की फिक्र के लक्ष्य बिल्कुल अलग है। यूं भी हर एक मसले पर बगैर शिद्दत और मज़बूत पहल के हमारे कदमों की छाप कहीं बाकी नहीं रहेगी।

'जल-आन्दोलन' के बहाने उठी कलम ने उन रास्तों की तलाश की जो इन्सान को अपनी जड़ों से जोड़ दे, जो सालों साल टिका रहे, जो चेतन भी हो, और अभियांत्रिकी और वास्तु की बारीकियों का मान भी रखे। कलम और कैमरे से खंगाली गई तमाम कहानियों में हम वो दुनिया भी करीब से देख पाए जहां हमारी मान्यताएं और आस्थाएं गुंथी थीं। जिन्हें हम अपना खूबसूरत अतीत कहकर और पानीदार देखना चाहते हैं। लेकिन आगे बढ़ने के मायने यही बचे हैं कि हम तकनीक-विज्ञान और पारम्परिक समझदारी के बीच तालमेल में रहकर अपनी असल रफ्तार में रह सकें। लेखन की इस यात्रा में जीवन की बुनियादी समझ वाले सरल गांव मिले, तालाब, ओरण-गोचर संभाले और पुरखों की नसीहतें मानते युवा मिले और भूले बिसरे जल-स्रोतों को जिन्दा कर किसानों की कम्पनी यानी एफपीओ बनाकर खेती के काम से मुनाफा कमाते संगठन मिले। ग्रामीण जीवन की चुनौतियों का सामना करती महिलाओं के समूहों से मुलाकात हुई जिन्होंने संस्थाओं के साथ जुड़कर सैंकड़ों गांवों की तकदीर बदल दी।

अंक दर अंक कही गई देश के अलग अलग हिस्सों की इन कहानियों में दुनिया के पैमानों पर देश में पानी को लेकर हो रहे कारगर कामों का ज़िक्र भी हुआ तो देश के अव्वल तकनीकी संस्थानों में पानी और परम्पराओं को जोड़कर साफ पानी मुहैया कराने की सस्ती तकनीक, शोध और सफल प्रयोगों की भी बात हुई। पानी को लेकर सृजनशील और प्रयोगधर्मी समुदायों की बात भी भरपूर सुनी और कही गई। गांवों और शहरों की बसावटों में सबसे बड़ी छटपटाहट यही है कि पानी की संभाल के बगैर आर्थिक तरक्की की गुंजाइश कहां से बनेगी। हमारी सभ्यताओं में पेड़, तालाब, पशु, पंछी और पानी सबके इलाकों का बंटवारा था, सबकी परवाह थी। मगर इन्सानी दखलन्दाज़ी और भूख ने आपसी मेलजोल के सारे सिरे उधेड़ दिए। दुनिया भर में जलवायु का गहराता संकट इसी का नतीजा है।

दशक भर पहले ही 'यूएन' यानी संयुक्त राष्ट्र संघ ने पीने के लिए साफ पानी की जरूरत को अहम मानव अधिकार मान लिया था। आज करीब आधा भारत पानी के गंभीर संकट की चपेट में है, करीब 60 करोड़ लोगों पर मार है। हर साल साफ पानी तक पहुंच नहीं होने से हमारे करीब दो लाख लोग मौत के शिकार होते हैं। ऐसे में अटल भूजल योजना के बूते करीब नौ हज़ार पंचायतों में हो रहे जल-प्रबन्धन के काम आने वाले वक्त की तस्वीर कैसे बदल रहे हैं, ये कहानियां भी दर्ज होना शुरू होंगी। पानी के मिशन के एक चरण में देश की दो लाख 63 हज़ार 274 पंचायतों में गांवों में साफ पानी के लिए समितियां बनी हैं जिसका जिम्मा सरपंचों का है। समितियों के मार्फत होने वाली पानी की जांच की कमान महिलाओं के हाथ होगी। समुदाय के बूते हो रहे पानी के काम सबसे दमदार हैं, जिनकी बात लगातार सुनाई देने लगी है। समेकित खेती, जल स्रोतों की सफाई-गहरीकरण, बरसाती पानी के लिए खेत-तलाई, पानी-मिट्टी की सेहत के लिए फसलों के चक्रीकरण जैसे परम्परागत काम अब वैज्ञानिक सोच और योजनाओं के दम पर अमल में आने लगे हैं। इन तमाम कामों पर भी मीडिया की निगरानी ज़रूरी है ताकि काम में कोई कोताही न बरते और अन्जाम हमारी उम्मीदों से बढ़कर आयें। सबसे बड़ा हासिल ये रहे कि न केवल पानी की बचत को लेकर हमारी आदतों में और तकनीक में सुधार हो बल्कि समाज और संसद दोनों की जल-जवाबदेही के बीच 'जल-आंदोलन' जारी रहे। यदि पानी की पदचाप वक्त रहते सुनी जाएगी तो वहीं से हमें असरदार कामों को दोहराने की पगडंडियां मिलेंगी, जल-जागृत समाज की झलक मिलेगी, और जानकारियों की खाई पाटने का मौका हासिल होगा। ☐

वेदों में हमारी पृथ्वी

दीपक सिंह बैस
(लेखक - नर्मदा समग्र मीडिया समन्वयक)

हमारी पृथ्वी सम्पूर्ण ब्रम्हांड एक ऐसा स्थान है जहां जीवन है। जिसमें जीव तत्व का पोषण करने की शक्ति है हमारे वेदों में पृथ्वी माता के रूप में अन्तर्भाव में ही निहित है। अथर्ववेद में कहा गया है 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या' अर्थात पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हू। यजुर्वेद में भी कहा गया है कि नमो मात्रे पृथिव्ये, नमो मात्रे पृथिव्याः अर्थात माता पृथ्वी को नमस्कार है, मातृभूमि को नमस्कार है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में तो यहां तक कहा गया है कि भूमि की रक्षा के लिए हम आत्म-बलिदान के लिए तैयार रहें वयं तुश्यं बलिहृतः स्याम। जब हमारी पुरातन वैदिक ज्ञान पृथ्वी के सरंक्षण के प्रति इतने सचेत हैं तो हमें भी प्रकृति का अतिदोहन नहीं करने के बारे में सोच भी कैसे सकते हैं, बल्कि हमें तो इस धार के संरक्षण पर बल देना चाहिए।

हमारी वैदिक संस्कृति में पृथ्वी संरक्षण पर विशेष महत्व दिया गया है। अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त इस विषय को उल्लेखित करता है...

यत्रे भूमि विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।
माते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पितम्।।
अथर्ववेद 12.1.35

अर्थात् हे भूमि! मैं अगर तेरा कोई भी भाग खोदूं तो यह तुरंत भर जावे। हे खोजने लायक पृथ्वी! मैं ऐसा कुछ न करूँ, जिससे आपके मर्मस्थल पर चोट पहुँचे और न ही आपको कोई हानि पहुंचाऊ। पृथ्वी के प्रति यह प्रार्थना यह दर्शाती है कि वैदिक दृष्टिकोण पृथ्वी को लेकर कितना संवेदनशील है। अगर ऐसी ही संवेदना हम भी हमारे कर्मों में रखे तो इस धार का संरक्षण स्वयं ही हो जायेगा।

वेदों के अनुसार पृथ्वी सभी जीव जन्तुओं का आश्रय थल है। यह हमें पोषित करती है, पालती है। हमें धारण करती है। इसलिए पृथ्वि का संरक्षण करना हम सभी का कर्तव्य है।

यावत् तेऽभि विपश्यानि भूमे सूर्येव मेदिना।
तावन्मे चक्षुर्मा मेष्टोतरामुत्तरं समाम्।
अथर्ववेद 12.01.33

अथर्ववेद के इस ऋचा में हमें बताया गया है कि हे भूमि! जब तक यम सूर्य के साथ आपके निबंध रूपों का दर्शन करूँ, तब तक मेरी दृष्टि उत्तम और अनुकूल क्रिया को नष्ट न करें।

विश्वंभरा वसुधानी प्रतिष्ठा
हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी।
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिंद्रऋषभा
द्रविणे नो दधातु।।
अथर्ववेद 12.01.6

यहाँ पर हम पृथ्वी के विभिन्न रूपों से अपने संरक्षण की कामना करते है।

सब का भरण-पोषण करने वाली हम सब को अपने ऊपर धारण करने वाली सब प्रकार के ऐश्वर्य को अपने में धारण करने वाली, सब का आधार, सब को आश्रय सर्व हितकारी और रमणीय पदार्थो को अपने वक्ष स्थल में रखने वाली सब जगत् को अपने में कल्याण करने वाली, अग्नि को अपने में रखने वाली इंद्र अधिपति मानने वाली जिसका ऐसी वह हमारी मातृभूमि हमें बल और धन में धारण करे हमें सुरक्षित रखे।

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा
अस्मभ्यं पंतु पृथिवि स्यूताः
दीर्घं न आयुः प्रतिबुह्यमाना
वयं तुश्यं बलिहृतः याम।।
अथर्ववेद 12.1.62

पृथ्वी के संरक्षण के लिए अथर्ववेद में ऋषि अपनी चिंता व्यक्त करते हैं और कहते हैं कि है पृथ्वी! तेरी गोद में हम निरोग बनें। अपनी धातु को दीर्घ काल तक बनाये रखते हुए तेरे लिए बलिदान देने लायक बने है। यहाँ पर

ऋषि पृथ्वी के संरक्षण के लिए अपना बलिदान तक देने की बात कहते हैं।

अश्व इव रजो दुन्दुवे नि तान जनान् य
आक्षियन पृथिवी यादजायत्
मन्द्राग्रेत्वरी भुवनस्य गोपा वनस्पतीनां
गृभिरोषधीनाम्।।

अर्थववेद 12.1.57

अर्थववेद की इस ऋचा में ऋषि हमें सचेत करते हुए कहते हैं कि यदि समय रहते पृथ्वी को संरक्षित नहीं किया गया, तो मनुष्य प्रजाति को दुष्परिणम भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए क्योंकि जिस प्रकार अश्व धूल कणों को हिला देता है उसी प्रकार यह हर्षदायिनी, अग्रगामिनी, संसार की रक्षा क ने वाली, वनस्पतियों और औषधियों की ग्रहण स्थली पृथ्वी ने उन मनुष्यों को हमेशा ही हिलाया है जो इसका संरक्षण न कर हानि पहुंचाते है।

ऋग्वेद में ऋषियों इस धरा को पृथ्वी माता कह कर संबोधित किया है -

द्यौर्मे पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्मे
माता पृथिवी महीयम् ...

ऋग्वेद 1.164.23

अर्थात् आकाश मेरे पिता है, बन्धु वातावरण है मेरी नाभि है औरयह पृथ्वी मेरी माता है जो कि सबसे महान है।

ऋग्वेद में समग्र पृथ्वी की स्वच्छता पर बल देते हुए कहा गया है कि-

पृथ्वीः पूः च उर्वी भवरू

ऋग्वेद 1.555.1976

अर्थात समग्र पृथ्वी, सम्पूर्ण परिवेश परिशुद्ध रहे। यदि हमारी पृथ्वी स्वच्छ रहेगी, तो हमारा जीवन भी सुखदायी होगा। जीवन के सम्यक विकास के लिए पर्यावरण का स्वच्छ रहना नितांत आवश्यक है।

वृहद्आरण्यकोपनिषद् में याज्ञवल्क्य ऋषि मैत्रोयी को समझाते हुए कहते हैं कि यह पृथ्वी सभी भूतों (मूल तत्वों) का मधु है और सब भूत इस पृथ्वी के मधु हैं -

इयं पृथ्वी सर्वेषां भूतानां मध्वस्यै पृथिव्यै
सर्वाणि भूतानि मयु।

वृहदारपकोपनिषद् 2.5

जब वैदिक ऋषि पृथ्वी के संरक्षण के प्रति इतने सचेत हैं तो हमें भी प्रकृति का अतिदोहन नहीं करना चाहिए। हमारे वेदों वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण को प्रभावित करने वाले प्रत्येक कारकों को देवता की संज्ञा दी गई है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम पृथ्वी की रक्षा हेतु हमेशा सहअस्तित्व का भाव रखें। हमारा वैदिक ज्ञान सदैव से पृथ्वी को माता के रूप में देखता है और उसके संरक्षण पर बात करता है। किन्तु पुरातन ज्ञान को भूल कर हम पश्चिम की चमक से प्रभावित हो कर आज इस धरा के संरक्षण के लिए पृथ्वी दिवस मना रहे हैं। □

विश्व प्रवासी पक्षी दिवस

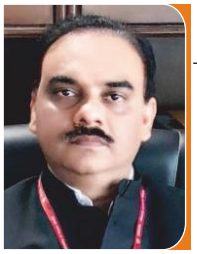

डॉ. सुनीश बक्शी

(लेखक - आई.एफ.एस. अधिकारी, महानिरीक्षक, वन विभाग, केंद्रीय वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय हैं।)

विश्व प्रवासी पक्षी (World Migratory Bird Day) दिवस 14 मई को भारत सहित दुनिया भर के देशों में मनाया जाता है। यह प्रवासी पक्षियों के सामने आने वाले खतरों, उनके पारिस्थितिक महत्व और उनके संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता के बारे में वैश्विक जागरूकता बढ़ाने में मदद करने केलिए एक प्रभावी उपकरण है। हर साल दुनिया भर में लोग विश्व प्रवासी पक्षी दिवस मनाने के लिए पक्षी उत्सव, शिक्षा कार्यक्रम, प्रदर्शनियां और पक्षी-देखने के भ्रमण जैसे सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित करते है। विश्वभर के लोगों को समझाने और उन्हें जागरूक करने के लिए साल में दो बार मई और अक्टूबर के दूसरे शनिवार को विश्व प्रवासी पक्षी दिवस मनाया जाता है।

प्रवासी पक्षी हमारे पारिस्थितिक तंत्र (Ecosystem) के लिए काफी फायदेमंद हैं पक्षियों के द्वारा ही फूलों में परागकण (pollination) प्रक्रिया, बीज फैलाव एवं कीट नियंत्रण जैसी महत्वपूर्ण कार्य किए जाते हैं। साथ ही यह पर्यटन और फोटोग्राफी जैसी प्रमुख आर्थिक लाभ और लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं। भारत में साइबेरिया, रूस, अफ्रीका, यूरोप, सिंगापुर आदि से बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षी आते हैं। भारत में आने वाले पांच प्रमुख प्रवासी पक्षी है :

- साइबेरियन (Siberian Cranes)
- अमूर फाल्कन (Amur Falcons)
- राजहंस (Greater Flamingo)
- रोजी पेलिकन (Rosy Pelican)

फोटो - मुकुल यादव

- एशियाई कोयल (Asian Cuckoo)

साइबेरियन सारस हर वर्ष साइबेरिया के जंगलों से भारत आते हैं। यह दुनिया का सबसे बड़ा उड़ने वाला पक्षी है। केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में साइबेरियन सारस प्रतिवर्ष आते है। विगत कुछ वर्षों में इनके आने में कमी हुई है। 50 किलोमीटर प्रति घण्टा की रफ्तार से यह पक्षी करीब 500 किलोमीटर की यात्रा करता है। सर्दियों के मौसम में साइबेरियाई सारस भारत का रूख करते हैं। अमूर फाल्कन बाज परिवार की प्रजाति है। यह साईबेरिया से भारत बड़े झुंडों में प्रवास करता है। प्रवास के दौरान यह करीब 22 हजार किलोमीटर की यात्रा करता है। फ्लेमिंगो बर्ड्स की सबसे बड़ी प्रजाति है। यह अफ्रीका, यूरोप और भारत में पाया जाता है। राजहंस भारत में गर्मी के दौरान प्रवास करते है। राजहंस गर्मियों में रहना पसंद करते हैं। प्रवास के दौरान यह पक्षी केवल रात को ही उड़ता है। रॉजी पेलिकन पक्षी हर साल यूरोप से भारत के उत्तर में आता है। यह सर्दियों में भारत की ओर प्रवास करता है। इस पक्षी का मुख्य आहार मछली है। यह भारत के अलावा अफ्रीका में भी प्रवास करता है। एशियाई कोयल सिंगापुर से भारत के पुड्डुचेरी में प्रवास के लिए आती है। यह एशियाई कोयल भारत की मूल निवासी नहीं है। गर्मियों में सिंगापुर में इनके रहने लायक वातावरण नहीं रहता है। इसलिए कोयल भारत यात्रा पर आती हैं। हमिंग बर्ड सबसे छोटा प्रवासी पक्षी है और यह प्रवास करते समय 48 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से यात्रा कर सकते हैं।

कृत्रिम प्रकाश प्रति वर्ष कम से कम 2 प्रतिशत तक वैश्विक स्तर पर बढ़ रहा है और यह कई पक्षियों की प्रजातियों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने के लिए जाना जाता है। प्रकाश प्रदूषण प्रवासी पक्षियों के लिए एक खतरा है इससे रात में उड़ान भरने पर भटकाव होता है और पक्षियों की लंबी दूरी के प्रवासन करने की क्षमता पर असर पड़ता है। पारिस्थितिक संतुलन और जैव विविधता को बनाए रखने के लिए प्रवासी पक्षी आवश्यक हैं क्योंकि वे राष्ट्रों, लोगों और पारिस्थितिक तंत्र को जोड़ते हैं। विभिन्न प्रकार की समस्याओं के परिणामस्वरूप प्रवासी पक्षियों की संख्या हर दिन घट रही है, जिसमें गैरकानूनी हत्या, आवास क्षति और पारिस्थितिकी तंत्र में छोड़े गए रसायनों में शामिल हैं। सभी प्रवासी पक्षी हमारी साझा प्राकृतिक विरासत का हिस्सा हैं। इस साल विश्व प्रवासी पक्षी दिवस 2022 की थीम प्रवासी पक्षियों पर प्रकाश प्रदूषण का प्रभाव (Impact of Light Pollution on Migratory Birds) है, तो वहीं इस साल का स्लोगन (नारा) रात में पक्षियों के लिए रोशनी कम करें! (Dim the Light for Birds at Night!) है।

प्रवासी पक्षी हमारे पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए हमें उनके आवास को संरक्षित करने और क्षेत्रों में अधिक जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है जहाँ प्रवासी पक्षी रहते हैं। □

विश्व मधुमक्खी दिवस

डॉ. सुनीश बक्शी

संयुक्त राष्ट्र संघ की विश्व मधुमक्खी दिवस (World Bee Day) हर साल 20 मई को मनाया जाता है। स्लोवेनिया के तरफ से आए प्रस्ताव के कारण ही संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2018 में 20 मई को विश्व मधुमक्खी दिवस के रूप में घोषित किया। स्लोवेनियाई के मधुमक्खी पालन एंटोन जानसा (Anton Jansa) के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इसकी पहल 2014 में यूरोपीय देश स्लोवेनिया के मधुमक्खी पालन संघ के द्वारा की गई थी। वर्ष 2022 की विश्व मधुमक्खी दिवस का थीम था A "Bee Engaged" मधुमक्खियों की विविधता एवं मधुमक्खी पालन का महत्व।''

इसका उद्देश्य मधुमक्खियों के साथ-साथ अन्य परागकणों (pollinators) जैसे चिड़ियों, तितलियों, चमगादड़ों एवं अन्य कीटों के भी पर्यावरण में महत्व के बारे में जागरूकता फैलाना है। इस तिथि को चुनने का एक कारण यह भी है कि मई का ही महीना वह समय होता है जब मधुमक्खियां सबसे अधिक सक्रिय होती हैं। निश्चित रूप से इस समय उन्हें पराग कणों की भी सबसे अधिक आवश्यकता होती है। दुनिया भर में मधुमक्खियों की 20 हजार से भी अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं और यही कारण है कि मधुमक्खियां सबसे बड़ी परागणकर्ता (pollinator) भी है। भारत में मधुमक्खियों की 5 प्रमुख प्रजातियां पाई जाती हैं जिनसे शहद प्राप्त किया जाता है। ये प्रजातियाँ हैं :-

- एपिस डोरसॅटा (Rock Bee) - इन मधुमक्खीयों के एक छत्ते से एक साल में तकरीबन 36 किलो तक शहद प्राप्त हो सकता है।
- एपिस फ्लोरिया (Little Bee) - इनके एक छत्ते से एक साल में तकरीबन 1/2 किलो ही शहद प्राप्त होता है।
- एपिस सेराना इन्डिका (Asian Bee) - इनकी एक कोलोनी से 6-8 किलो शहद प्राप्त हो सकता है।
- एपिस मेलिफेरा (Apis mellifera) - इनका औसत शहद उत्पादन 25-40 किलो है।
- मेलिपोना/ट्रिगोना (Dammer or Stingless Bee) - ये मधुमक्खियां शहद की अत्यन्त कम उपज (100 ग्राम तक) देती है।

मधुमक्खी का इतिहास और जीवन चक्र

मधुमक्खियाँ धरती पर करोड़ों साल से रह रही हैं और शहद तैयार कर रही है। मधुमक्खियों के शहद को हजारों सालों तक रखा जा सकता है, यह खराब नहीं होता है। इनका धरती पर इतिहास मनुष्य से भी पहले का है। धरती पर मौजूद सभी जीव जंतुओं में से मधुमक्खियों की भाषा सबसे कठिन है। 1973 मैं "Karl Von Frisch" को इनकी भाषा "the waggle dance" को समझने के लिए नोबल पुरस्कार मिला था। मधुमक्खियों का एक दूसरे के साथ संवाद करने का एक अद्भुत तरीका है। वे नृत्य करती हैं। श्रमिक मक्खियाँ छत्ते में मकरंद या पराग के साथ लौटते हुए अन्य श्रमिक मधुमक्खियों को नृत्य के माध्यम से उस फूल का पता बताते है जहाँ उन्हें पराग प्राप्त हुआ। इस नृत्य को वैगल डांस (the waggle dance) कहते हैं।

मधुमक्खी के एक छत्ते में 50 हजार मधुमक्खियाँ रह सकती है, एक छते में 3 प्रकार की मधुमक्खियां रहती हैं इसमें सैकड़ों नर मधुमक्खी होते हैं, जिन्हें ड्रोन्स कहा जाता है, वहीं हजारों की संख्या में मादा मधुमक्खियां भी रहती हैं, जिन्हें वर्कर यानी श्रमिक मधुमक्खी भी कहा जाता है। मधुमक्खी का निवास छत्ते पर होता है। यह मनुष्य की तरह ही कॉलोनी बनाकर रहती है। मधुमक्खी के झुंड में ज्यादातर मादा मधुमक्खियाँ होती है। छते में एक रानी मधुमक्खी होती है। नर मधुमक्खी का जीवनकाल (आयु) मात्र 45 दिन का होता है। रानी मधुमक्खी का जीवन चक्र (आयु) 5 साल तक हो सकता है। केवल रानी मधुमक्खी ही अंडे देती है, वह एक दिन में 2000 से 2500 तक अंडे दे सकती है। रानी मधुमक्खी का वजन और आकार बाकी मधुमक्खियों से बड़ा होता है। मजदूर मधुमक्खी का कार्य छत्ते की देखभाल, बच्चो की देखभाल, साफ सफाई, फूलों से रस चूसकर लाना होता है और कुछ मधुमखियाँ रक्षा का कार्य करती है।

मधुमक्खी फूलों के रस को चूसने के लिए 10 से 15 किलोमीटर दूर तक चली जाती है। यह फूलों के रस को छत्ते पर इक्कठा करती है। मधुमक्खी के द्वारा जिस रस को चूसा जाता है, उसे मधुरस (Nectar) कहते है। मधुमक्खियां पेड़ पौधों के पराग कणों (pollen) को एक पौधों से दूसरे पौधों तक पहुंचाने में मदद करती हैं। जब मधुमक्खी किसी एक फूल पर बैठती है तो उसके पैरों और पंखों में पराग कण चिपक जाते हैं और जब यह उड़कर किसी दूसरे पौधे पर बैठती है, तब यह पराग कण उस पौधे में चले जाते हैं इस प्रक्रिया को परागण (Pollination) कहा जाता है, और उसे निषेचित कर देते हैं इससे फल और बीजों की उत्पत्ति होती है।

मधुमक्खी का छत्ता मोम का बना होता है। इसमें छोटे-छोटे छिद्र रूपी कोष बने होते है। फूल के रस को इन्हीं कोषों में रखा जाता है। मोम मधुमक्खियों के पेट पर बनी ग्रन्थियों से निकलता है। मधुमक्खी के दो पेट होते है। एक पेट में गया रस मधुमक्खी के शरीर को ऊर्जा देने का कार्य करता है। दूसरे पेट में फूलो का रस इक्कठा होता है। पेट में मौजूद एंजाइम (Invertase) उस रस को शहद में बदल देते है। कुछ समय बाद मधुमक्खी उस रस को उल्टी करके पेट से बाहर निकाल देती है। यह रस गाढ़ी प्रवृत्ती का होता है। मधुमक्खी के द्वारा उत्पादित शहद स्वाद में मीठा और स्वास्थ्यवर्धक होता है। यह कई प्रकार की औषधियों में काम आता है।

COP-2000 (Conference of Parties) में भी अंतर्राष्ट्रीय परागकण पहल की शुरूआत की गई थी। 2022 में भारत सरकार ने भी मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के लिए 500 करोड़ के वित्त से 'मीठी क्रांति' की शुरुआत की इस मिशन का उद्देश्य 5 बड़े एवं 100 छोटे शहद व अन्य मधुमक्खी उत्पाद (जैसे वेक्स/मोम) परीक्षण प्रयोगशालाएँ स्थापित करना है।

मधुमक्खी पालन (एपीकल्चर)

एपीकल्चर का मतलब मधुमक्खी पालन, मधुमक्खियों का प्रबंधन और अध्ययन करना है। व्यावसायिक स्तर पर शहद के उत्पादन के लिए मधुमक्खी पालन और मोम के उत्पादन के लिए उसकी देखभाल की जाती है। मधुमक्खी पालन से हर महीने 1 से 1.5 लाख रुपए की कमाई हो सकती है।

मधुमक्खी पालन की खास बात यह है कि इस काम को छोटे खेत के साथ ही घर की छत, मेड़ के किनारे, या फिर तालाब के किनारे आसानी से किया जा सकता है, इसके लिए कई योजनाओं में सरकारी सहायता भी मिल जाती है। इस व्यवसाय के लिए चार तरह की मधुमक्खियां एपिस मेलीफेरा, एपिस इंडिका, एपिस डोरसाला और एपिस फ्लोरिया इस्तेमाल होती है। व्यवसाय की दृष्टि से एपिस मेलीफेरा अधिक शहद उत्पादन करने वाली और स्वभाव की शांत होती है, इन्हें डिब्बों में आसानी से पाला जा सकता है। इस प्रजाति की रानी मक्खी में अंडे देने की क्षमता भी अधिक होती है। मधुमक्खी पालन के लिए लकड़ी का बॉक्स, बॉक्सफ्रेम, मुंह पर ढकने के लिए जालीदार कवर, दस्तानें, चाकू, शहद, रिमूविंग मशीन, शहद इकट्ठा करने के ड्रम का प्रयोग किया जाता है। मधुमक्खी पालन एक व्यापक और वैश्विक गतिविधि है, जिसमें लाखों मधुमक्खी पालक अपनी आजीविका और कल्याण के लिए मधुमक्खियों पर निर्भर हैं। जंगली परागकणों के साथ, मधुमक्खियां जैव विविधता को बनाए रखने कई पौधों के अस्तित्व सुनिश्चित करने व पुनर्जनन का समर्थन करने जलवायु परिवर्तन के लिए स्थिरता और अनुकूलन को बढ़ावा देने, कृषि उत्पादन की मात्रा और गुणवत्ता में सुधार करने में एक प्रमुख भूमिका निभाती है।

एक अध्ययन के अनुसार हमें जो भोजन प्राप्त होता है उसका प्रत्येक 3 में से 1 निवाला हमें मधुमक्खियों के कारण ही प्राप्त होता है। अर्थात विश्व की लगभग 33% कृषि मधुमक्खियों पर ही निर्भर है। मधुमक्खियाँ पराग (नेक्टर) पाने के लिए एक से दूसरे फूल पर मंडराती है। किंतु वर्तमान में मधुमक्खियाँ निवास स्थान के नुकसान (habitat loss) कृषि में कीटनाशकों के अन्धाधुन्ध प्रयोग, जलवायु परिवर्तन और मोबाइल टावरों की बढ़ती संख्या इत्यादि के कारण खतरे में हैं। पिछले कुछ दशकों में ही दुनिया भर में मधुमक्खियों की संख्या में लगभग 40% की कमी आई है। यदि इसपर नियंत्रण नहीं किया गया तो इनकी कई प्रजातियाँ हमेशा के लिए लुप्त हो जाएंगी, जो कि न केवल वैश्विक खाद्य सुरक्षा बल्कि सम्पूर्ण पर्यावरण के लिए घातक होगा।

COP-2000 (Conference of Parties) में भी अंतर्राष्ट्रीय परागकण पहल की शुरूआत की गई थी। 2022 में भारत सरकार ने भी मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के लिए 500 करोड़ के वित्त से 'मीठी क्रांति' (sweet revolution) की शुरुआत की इस मिशन का उद्देश्य 5 बड़े एवं 100 छोटे शहद व अन्य मधुमक्खी उत्पाद (जैसे वेक्स/मोम) परीक्षण प्रयोगशालाएँ स्थापित करना है। साथ ही मधुमक्खी पालकों की आय को दोगुना करना भी है। इस प्रकार इस योजना में पर्यावरण सुरक्षा के साथ-साथ कृषकों की बेहतरी का दोहरा लक्ष्य है। □

माँ नर्मदा भारत की तीसरी सबसे बड़ी नदी

शैलेष पंवार

(लेखक - जैविक कृषक एवं व्यवसायी हैं।)

नर्मदाजी अनेक गांवो, शहरो, जंगलो व पहाडो से होकर अपने प्रवाह मार्ग को शांति प्रदायक बनाती हैं। जहां एक ओर ओंकारेश्वर में ज्योतिर्लिंग सहित दोनों तटों पर अनेक आध्यात्मिक महत्व के मंदिर स्थित हैं वहीं दूसरी ओर जबलपुर के पास धुंआधार जलप्रपात, भेडाघाट में संगमरमर की चटटानों से बहता जल, बंदरकुदनी, नेमावर के पास हिरनफाल, महेश्वर, शूलपाणी पहाडी, कोटेश्वर एवं सतपुडा व विंध्याचल पर्वतों के घने जंगल आदि मनोरम स्थल भी है।

भारत की पवित्र नदियों में एक नर्मदा नदी भी है। यह पूर्व से पश्चिम की ओर बहने वाली नदी है। उत्तर व दक्षिण भारत की सीमा रेखा होकर भारतीय उपमहाद्वीप की पांचवी व भारत की तीसरी सबसे बड़ी नदी है । नर्मदा नदी मध्यप्रदेश के अनुपपुर जिले में अमरकंटक स्थित एक छोटे से कुंड ''रेवाकुंड'' से निकलकर 1312 किमी यात्रा कर गुजरात के भरूच से आगे खंभात की खाड़ी से होकर अरब सागर में मिल जाती है। अपनी यात्रा में नर्मदाजी मध्यप्रदेश में 1077 किमी , महाराष्ट्र में 74 किमी एवं गुजरात में 161 किमी बहती है। नर्मदाजी अनेक गांवो , शहरो , जंगलो व पहाडो से होकर अपने प्रवाह मार्ग को सुकुनदायक बनाती है। जहां एक ओर ओंकारेश्वर में ज्योतिर्लिंग सहित दोनों तटों पर अनेक आध्यात्मिक महत्व के मंदिर स्थित है । वहीं दूसरी ओर जबलपुर के पास धुंआधार जलप्रपात, भेडाघाट में संगमरमर की चटटानों से बहता जल, बंदरकुदनी, नेमावर के पास हिरनफाल, महेश्वर, शुलपाणी पहाड़ी, कोटेश्वर एवं सतपुडा व विंध्याचल पर्वतों के घने जंगल आदि मनोरम स्थल भी है।

नर्मदाजी के बहाव क्षेत्र में अनेक स्थानों पर बांध बनाये गये है। जिसमें गुजरात में बना सरदार सरोवर बांध प्रमुख है। माननीय प्रधानमंत्रीजी आदरणीय नरेन्द्रजी मोदी ने इस बांध के पास विश्व प्रसिद्व सरदार वल्लभ भाई पटेल की 597 फीट ऊंची स्टेच्यू आफ युनिटी बनवाई हैं। सरदार सरोवर बांध से दूरस्थ सुखे क्षेत्रों में पेयजल व सिंचाई के लिये नहरों के माध्यम से पानी पहुंचाया जा रहा है। वहीं

बिजली का भी भरपूर उत्पादन किया जाता है ।

नर्मदाजी अपने उदगम से समापन स्थल तक की यात्रा में अनेक कडवे-मीठे अनुभवों के साथ आस्था पर भारी पडते अंधविश्वासों के कारण अपने अमृत तुल्य पावन जल की पवित्रता एवं शुद्धता बनाये रखने में असमर्थ हो गयी है।

नर्मदाजी के प्रति लोगो की गहरी आस्था स्वाभाविक है। लेकिन इसके जल व तटों की पवित्रता बनाये रखना भी उतना ही आवश्यक है। वर्तमान समय में नर्मदा नदी पर बनाये बड़े बांधो में कई महिनों तक पानी भरा रहता है। लोग अपनी धार्मिक भावनाओं के कारण इसके दोनों तटों पर बडी संख्या में शवों का अंतिम संस्कार करते है। कैंसर, टीबी आदि गंभीर बीमारियों से मरने वालें, दुर्घटनाओं में मृत एवं जहर पीकर या फांसी पर लटक कर आत्महत्या करने वालों का पोस्टमार्टम किये शवों को माँ नर्मदा के जल में सीधे स्नान करवाकर दाह संस्कार किया जाता है। मृतको की अस्थियां एवं पारिवारिक व सामाजिक कार्यो में प्रयुक्त पूजन सामग्री के अवशेष नर्मदाजी में विसर्जित करने की परम्परा बन गयी है। बड़ी संख्या में लोग नदी में सिक्के डालकर जलीय जीवों के लिये प्राणों का संकट पैदा करते है।

शासन हर साल मछलियों के प्रजनन काल में मत्स्याखेट पर सख्त प्रतिबंध के लिये आदेश जारी करता है। लेकिन इसका पालन शून्य प्रतिशत होता है। लोग बड़ी मात्रा में मछलियां मारकर बाजारों में बेचते है। आदिवासी क्षेत्रों में अंधविश्वासी बडवा प्रथा के कारण बडी संख्या में बेगुनाह मुक प्राणियों मुर्गो-बकरो की किनारों पर बलि देकर उनका खून व मांस नर्मदाजी को चढ़ाया जाता है। अब समय आ गया है कि शासन एवं नर्मदा समग्र द्वारा किये जा रहे प्रयासों से जनजागरण लाकर माँ नर्मदा एवं सहयोगी नदियों की पवित्रता स्थाई रूप से बनाये रखी जाये। □

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नदी उत्सव
Celebrating Rivers

खेती किसानी नदी की जुबानी

(18 - 19 मई 2022)

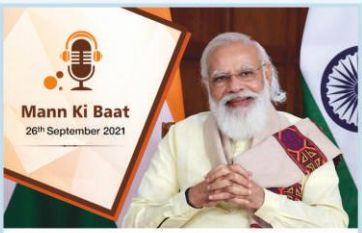

'वर्ल्ड रिवर डे' जब आज मना रहे हैं तो इस काम से समर्पित सबकी मैं सराहना करता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ। लेकिन हर नदी के पास रहने वाले लोगों को, देशवासियों को मैं आग्रह करूँगा कि भारत में, कोने- कोने में साल में एक बार तो नदी उत्सव मनाना ही चाहिए।

"नदियों के बारे में हमने कहा है ये जलप्रवाह मात्र नहीं हैं। माताएं हैं हमारी नदियां, सभ्यताएं है, नदियां संस्कृति हैं। नदियां को मां रुप में देखा है। नर्मदा और गंगा में अलग-अलग अवधारणाएं होने का सवाल ही नहीं हैं। सारी नदियां शुद्ध, पवित्र हैं। हमारा धर्म है, काम है कैसे नदियां शुद्ध रहें।"

- श्री शिवराज सिंह चौहान
मा. मुख्यमंत्री, म.प्र. शासन
(तृतीय अंतर्राष्ट्रीय
नदी महोत्सव 2013 उद्बोधन से)

नदी उत्सव - 2022, भोपाल

अवधारणा

पृष्ठभूमि

सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे ही हुआ है। जीवन को संभव बनाने वाले सभी जरूरी अवयव नदियों के आस-पास ही रहे हैं। भारतीय दर्शन नदियों को एक जीवंत इकाई मानता है, केवल जल स्रोत नहीं। नदियों के संरक्षण के प्रति यदि हम स्थाई और सुदृढ़ नीति की ओर बढ़ना चाहे तो यह तभी संभव होगा जब हम नदियों के प्रति ऋणी भाव रखते हुए, उन्हें जीवंत इकाई मानते हुए समग्रता से उनके संरक्षण पर विचार करें।

नदियों के संरक्षण का विचार केवल उनमें प्रवाहित होने वाले जल तक सीमित नहीं किया जा सकता। नदियाँ अपने में एक पूरा पारिस्थितिकी तंत्र समेटे हुए है जिसमें जल, जंगल, जमीन, समाज, जैव विविधता समेकित रूप से उसका हिस्सा हैं। नदियों के किनारे रहने-बसने वाले समुदायों की प्रकृति के प्रति अपनी परम्परागत समझ जो सैकड़ों-हजारों वर्षों के अनुभव का निचोड़ है को जानना-समझना भी ज़रूरी है।

नदियों के किनारे बसने वाले समाज/समुदाय की एक मूल्य चेतना रही है जो स्थानीय परम्पराओं, गीत- संगीत, लोक व्यवहार व देशज ज्ञान में परिलक्षित होती है। इन्हीं परम्पराओं में हमें वो सूत्र मिलते हैं जो प्रकृति के प्रति स्थानीय समुदाय की सोच को दर्शाते हैं। ये विचार-सूत्र ही हमारी संस्कृति के पोषक तत्व है जिन्हें संरक्षित किए जाने व आज के संदर्भों में समझने की ज़रूरत है।

आज हमारे प्राकृतिक संसाधन, खेती, आजीविका, जलवायु परिवर्तन के संकट से जूझ रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि इस वैश्विक संकट के समाधान सूत्र हमें देशज़ ज्ञान व परम्पराओं में मिल सकते हैं, जिनमें कि प्रकृति के साथ संगति रखते हुए जीवन-निर्वाह की दृष्टि दिखाई पड़ती है।

खेती-किसानी, नदी की जुबानी

हम सभी जानते हैं कि सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे ही हुआ है क्योंकि नदियों के किनारे अन्न व खाद्यान्न उपजाने का तंत्र विकसित था। इस सहज़ उपलब्ध तंत्र पर जब 'मनुष्य' ने तकनीक का इस्तेमाल किया तो इससे उत्पादन तो बढ़ा मगर साथ ही मनुष्य की लालसा भी बढ़ती गई। जहरीले रसायनों से नदियाँ तो प्रदूषित हुई ही, साथ ही जमीन भी अपनी उर्वरकता खोती रही। इस ज़हरीले प्रदूषण का असर स्थानीय जैव विविधता पर भी पड़ा। नर्मदा सहित हमारे देश की नदियाँ साक्षी है कि कैसे मनुष्य ने धीरे-धीरे प्रकृति के सामंजस्य के साथ छेड़-छाड़ की ओर अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए नदी तंत्र को 'बीमार' बना दिया।

'नदी की जुबानी' एक प्रतीक है नदियों की संवेदनाओं को प्रकट करने का और विचार करने का कि आखिर क्या वजह रही नदियों के बीमार होने की और अब कैसे सुधार हो सकता है ताकि नदियाँ सदानीरा बनी रहे ओर हमारे खेत भी स्वस्थ रहें तथा पर्यावरण भी सुरक्षित रह सके।

नदी किनारे आयोजित होने वाले नदी उत्सव में बहुत कुछ कहने-सुनने को होगा और बहुत कुछ करने का संकल्प भी लेना होगा, जिसमें व्यक्ति, समुदाय और सरकार शामिल होंगे। इस कार्यक्रम में जलवायु संकट, कृषि पद्धतियाँ, लोक विचार, नदी स्वास्थ्य, नीति-नियम, इत्यादि जैसे उप-विषयों के माध्यम से विभिन्न पक्षों/आयामों/मुद्दों/अनुभवों को जानने-समझने का अवसर हम सबको मिलेगा। सामाजिक कार्यकर्ता, विषय विशेषज्ञ, नीति-निर्धारक, इत्यादि एक साथ एक मंच पर सहभागी होंगे और आगे की दिशा-दशा तय करने में महत्वपूर्ण विचारों का संकलन हो सकेगा, जो कि भविष्य की योजनाओं में सहयोगी साबित होगा।

आयोजक एवं प्रायोजक

कार्यक्रम स्थल : कलियासोत नदी उद्गम के समीप, 'विज्ञान भवन', मेपकास्ट परिसर, नेहरू नगर, भोपाल

नदी उत्सव

- झलकियाँ

कलियासोत नदी

कलियासोत नदी, बेतवा नदी की सहायक नदी है जो भोपाल के निकट विंध्य की पहाडियों के बीच से निकलकर लगभग 30 कि.मी. की दूरी तय कर भोजपुर के पास बेतवा में समाहित हो जाती है। बेतवा नदी यमुना में मिलती है और यमुना गंगा से मिल जाती है। इस प्रकार भोपाल से निकली कलियासोत नदी में बारिश की बूंदे गंगा के प्रवाह में अपना योगदान देती हैं। 381.38 वर्ग किमी के जलग्रहण क्षेत्र वाली यह नदी 6194 हेक्टेयर की कृषि भूमि भोपाल और रायसेन जिले में सिंचित करती है।

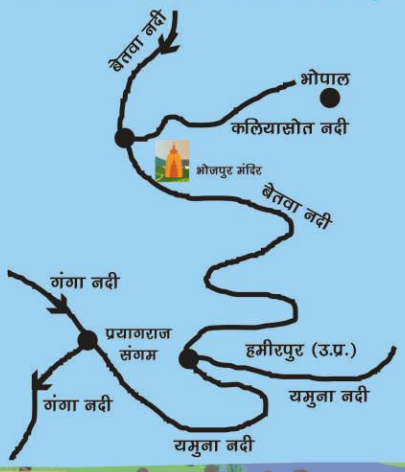

जनश्रुति है कि राजा भोज को एक असाध्य रोग हो गया था जिसके उपचार के लिए 100 नदी–नालों के जल में स्नान का प्रावधान दिया गया। 99 नदी–नालों की खोज की गई परन्तु 100वीं नदी खोजना मुश्किल हो गया। तब कालिया नाम के गौंड जनजाति मुखिया ने भोपाल के जंगलों से निकलने वाले कलियासोत नदी का प्रवाह 99 नदियों के कुण्ड की तरफ करके राजा के संकल्प को पूरा किया। कहा जाता है कि राजा भोज ने नदी की खोज करने वाले कालिया गौंड के नाम पर नदी का नाम कालिया स्त्रोत कर दिया जो कालान्तर में उच्चारण की सुगमता से कलियासोत हो गया।

अतिथियों के विचार

स्व. अनिल जी व्यक्ति नहीं संस्था थे। मैया की सेवा के लिए नर्मदा समग्र का गठन किया, एक नहीं कई नदी उत्सव का मैं साक्षी हूं। हरियाली की कल्पना को उन्होंने जमीन पर उतारने के गंभीर प्रत्यन किए। आज में उनके चरणों में इस संकल्प के साथ प्रणाम करता हूं कि जो काम आप अधूरा छोड़कर गए हैं, हम उसे पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। वर्तमान में केमिकल फर्टिलाइजर व रासायनिक कीटनाशकों से युक्त खेती से छुटकारा पाने के लिए स्वयं से शुरुआत करनी होगी। प्राकृतिक खेती को एक अभियान के रूप में लेना होगा। हमें केमिकल फर्टिलाइजर और कीटनाशकों का प्रयोग नहीं करना है। पर्यावरण को बचाने के लिए पहली जिम्मेदारी व्यक्ति की स्वयं की है इसलिए मैंने अपने संस्कार एवं स्वभाव में दैनिक वृक्षारोपण को शामिल किया है। हर व्यक्ति को वृक्षारोपण करना चाहिए क्योंकि पेड़ लगाना ही धरती बचाने का एक उपाय हो सकता है। मध्य प्रदेश की नदियां सदानीरा बनी रहे इसके लिए कुछ कठोर कदम एवं प्रावधान भी बनाए जा रहे हैं।

श्री शिवराज सिंह चौहान,
मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश शासन

जल सर्वाधिक आवश्यक इकाई है। जल है तो कल है। हमें जल को और पर्यावरण को बचाने के लिए सार्थक उपाय करना चाहिए। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के माध्यम से कई योजनाओं का संचालन किया जा रहा है जो कि नदी और पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण है। हमें जल संरक्षण के उपाय अपनाने होंगे। रसायनिक खादों से जल प्रदूषित होता है, इसके लिए हमारी मध्यप्रदेश सरकार विशेष पहल कर रही है, जैविक कृषि को बढ़ावा दिया जा रहा है, जैविक कृषि से जल के साथ ही पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है।

- श्री ओम प्रकाश सखलेचा,
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, म.प्र. शासन

समापन सत्र हम लोगों के लिए हमेशा नई कार्ययोजना का उद्घाटन सत्र होता है। मैं ऐसा ही मान कर चलता हूँ कि आज के नदी उत्सव का समापन सत्र फिर से नदी अनुरागियों के लिए, नदी पर काम करने वाले के लिए, और नदी पर सोचने वालों के लिए ये आगे की कार्ययोजना का उद्घाटन सत्र हो ।

श्री शैलेन्द्र शर्मा,
अध्यक्ष, कौशल विकास और रोजगार निर्माण बोर्ड, मध्य प्रदेश

विश्व में सारी सभ्यताएं नदी के किनारे ही फली फूली है। सभी जीव ईकाई का पोषणकर्ता जल और जल का पोषणकर्ता नदी ही है। जल और जीवन के बीच की खाई जितनी बढ़ चुकी है, उसे काबू करना आसान नहीं है। हम आज भी अपने संकल्पों के प्रति दृढ़ हो जाएं, जितना पानी हम उपयोग करते है उतना ही बचा ले,तब भी इससे काम नहीं चलेगा। भारत ने दुनिया में सबसे ज्यादा भूमि जल का दोहन किया। भारत वो देश है जिसने नदियों को मां माना, जीवनदायिनी माना, लेकिन जल संरक्षण पर ध्यान नहीं दिया। अनिल जी ने हमें एक विचार दिया था, आप स्मृतियां अशेष करने का संकल्प देकर चले गए। हो सकता है, आपका स्मारक बनाना निषेध रहेगा, क्योंकि आपकी इच्छापूर्ति होनी चाहिए। पर आपके विचार ने जो ताकत दी है वो सार्थकता के मुकाम तक पहुंचे ये अधिकार यहां बैठे लोगों को भी है और जो बाहर है उनके पास भी है।

- श्री प्रहलाद सिंह पटेल,
केन्द्रीय राज्यमंत्री, जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार

जल के बिना सब शून्य है। हमें पर्यावरण को बचाने के लिए केमिकल का उपयोग नहीं करना चाहिए। जल संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाना आवश्यक है। नदी कोई सामान्य चीज नहीं होती, नदी का मतलब है संस्कृति। अगर विचार करेंगे, तो इतिहास में कोई भी संस्कृति जहां भी उत्पन्न हुई है वह नदी के किनारे ही हुई है। जहां नदी नहीं होगी, वहां मानव नहीं होगा।

- श्री गोपाल आर्य,
राष्ट्रीय संयोजक, पर्यावरण संरक्षण गतिविधि

गलत विकास की आवधारणा हमने समाज के अंदर खड़ी की। इस कारण से समाज विकास की गलत दिशा में जा रहा है। इसलिए हमें अपने विकास के मापदड़ों को बदलना होगा और पर्यावरण अनुकूल भारतीय जीवनशैली का अपना होगा।

- श्री प्रवीण रामदास,
राष्ट्रीय सचिव, विज्ञान भारती

हमारी जनसंख्या 140 करोड़ है और जनसंख्या को 150 से 200 करोड़ होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। इसलिए हम सब अब सावधान हो जाएं और पानी की एक-एक बूंद को बचाने का भरसक प्रयास करें।

- डॉ. जितेंद्र जामदार,
उपाध्यक्ष, जन अभियान परिषद

अतिथियों के विचार

नदी उत्सव मात्र नदियों के संरक्षण की पहल नही है बल्कि ये ऐसा मंच है जहां नदी की चिंता करने वाले और नदियों में जीवन देखने वाले लोग एक साथ एक संगत करते हैं और उनके संगम से एक वातावरण तैयार होता है , सामूहिक भाव जाग्रत होता है, नदियों को पुनर्जीवित करने का। नदी उत्सव एक आदरांजलि है श्री अनिल माधव दवे जी को जिन्होंने नदियों की चिकित्सा और उनके सदानीरा बने रहने के लिए अपना जीवन समर्पित किया। भोपाल में आयोजित नदी उत्सव इस रूप में अनूठा था कि ये केवल नदी के जल तक सीमित नहीं था बल्कि समग्र रूप से नदी तंत्र पर गहन विचार विमर्श हुआ जिसमें नदियों के किनारे खेती, रोजगार, जैव विविधता, जंगल और जलवायु परिवर्तन जैसे विषयों को शामिल किया गया। वास्तव में नदियों को बचाने की बात समग्र दृष्टिकोण के साथ ही होनी चाहिए। अनिल जी की यही सोच नर्मदा समग्र के नाम से ही परिलक्षित होती है। अलग-अलग सत्रों में जन संगठनो, विशेषज्ञों के सुझावों को संकलित किया गया। अब जरूरत इस बात की हैं कि ये सुझाव केवल कागज तक सीमित नहीं रहे बल्कि सरकार, समुदाय और व्यक्तिगत रूप से सामूहिक प्रयास का आगाज हो और उसे जन आंदोलन का रूप दिया जाए।

नदी उत्सव के दौरान भोपाल की कालियासौत नदी के तट पर की गई नदी पूजा एक संदेश था मनुष्य और प्रकृति के बीच आध्यात्मिक सम्बंध जोड़ने का। नदी उत्सव को मैं एक ऐसी प्रार्थना के रूप में देखता हूँ जो नदियों के प्रति हमारे ऋणी भाव को प्रदर्शित करती है... हम प्रकृति के ऋणी हैं यह सोच जीवन में उतारने की प्रेरणा नदी उत्सव में शामिल सभी साथियों को मिली होगी... ऐसा मेरा विश्वास है...

- डॉ आलोक व्यास
जयपुर

भारत उत्सव प्रधान देश है। उत्सव स्मरण कराते हैं कि हम अपना मूल्यांकन करें कि क्या किया गया और क्या किया जाना शेष है? एक नई ऊर्जा के साथ आगे की योजना बनायें। जुमना की सहायक नदी बेतवा की उप नदी कलियासोत के किनारे मनाया गया यह नदी उत्सव इस उद्देश्य की पूर्ति करता है। नदियां केवल भावनाओं और पूज्या मानने से नहीं बचेंगी। इसके लिए उनका वैज्ञानिक अध्ययन अनिवार्य है। उनमें कैसे सतत प्रवाह (e-flow) बना रहे, प्रवाह भी ऑक्सीजन युक्त हो, उनके जल का सस्टेनेबल मैनेजमेंट कैसे हो, जल और उससे जुड़े घटकों से रोजगारों की उत्पत्ति कैसे हो- यह भी विचारणीय और करणीय होना चाहिए। यह नदी उत्सव उपरोक्त कथ्य का सज्जा वाहक है।

- डॉ. सुदेश वाघमारे
सेवानिवृत्त वन अधिकारी एवं पर्यावरण विशेषज्ञ

नदी उत्सव कार्यक्रम अपने आप में न केवल एक उत्सव है अपितु नदी की संस्कृति तथा उसके आसपास रहने वाले निवासियों को जानने एवं नदी के साथ उनके अंतरसंबंधों की कहानी को दर्शाता है। मध्यप्रदेश में आयोजित नदी उत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत हम नदी की संस्कृति, लोक विचार, नदी के आसपास कृषि एवं इससे संबंधित विभिन्न पहलुओं जैसे कृषि एवं नदी संरक्षण के लिए नीतियां एवं उसके समन्वय पर मंथन हुआ।

इस कार्यक्रम के माध्यम से देश भर से इस विषय में कार्य कर रहे विशेषज्ञों से उनके ज्ञान एवं अनुभवों का साझाकरण हुआ साथ ही साथ इस कार्यक्रम में सुनने एवं सीखने आए कार्यकर्ताओं का न केवल उत्साह बढ़ा अपितु उनके ज्ञान में वृद्धि हुई जिससे उनके कार्यों का आयाम बढ़ेगा। मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद तथा नर्मदा समग्र का यह संयुक्त आयोजन अत्यंत हर्ष का विषय है । इस कार्यक्रम से मध्यप्रदेश की नदियों के संरक्षण हेतु आगामी नीतियों पर प्रकाश मिल पाएगा। इस समागम के निष्कर्षों से इस क्षेत्र में कार्य कर रहे युवाओं को भी उचित मंच एवं मार्गदर्शन मिल सकेगा। मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के माध्यम से इस दिशा में हम नवीन योजनाओं एवं कार्यों को करने में सक्षम होंगे साथ ही साथ आम व्यक्ति में नदी एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता कार्यक्रमों को बढ़ाने हेतु उचित प्रयास करेंगे। इस कार्यक्रम से मध्यप्रदेश की जीवन रेखा माँ नर्मदा सहित अन्य सभी नदियों की सांस्कृतिक विरासत, उनका आध्यात्मिक पहलू, उनसे जुड़ा जनजीवन और उनके स्वस्थ क्रियाकलापों को समृद्ध करने मे नवीन दृष्टिकोण प्राप्त हुआ।

- विकास शेंडे,
प्रिंसिपल साइंटिस्ट, म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद

पर्यावरण को बचाना है तो हमे भारतीय संस्कृति में वापस आना पड़ेगा। फसलों की सर्वाधिक पैदावार पंजाब में होती है। रसायनिक कीटनाशकों के अत्याधिक प्रयोग से पंजाब देश का सबसे अधिक कैंसर वाला राज्य बन गया है। जिस ट्रेन से लोग इलाज कराने जाते हैं उसका नाम भी लोगों ने कैंसर ट्रेन रख दिया है। समय रहते रसायनिक कीटनाशकों का प्रयोग बंद नहीं किया गया तो यह समस्या पूरे देश में फैल जाएगी। पंच तत्वों में असंतुलन सूक्ष्म शरीर के तीन तत्व मन, बुद्धि और अहंकार के कारण हुआ है। हमें पांच तत्वों को संतुलित करने के लिए सूक्ष्म शरीर के तीन तत्वों में संतुलन स्थापित करना होगा। भारतीय संस्कृति में लोकोत्सव के माध्यम से हम प्रकृति को पूजते थे, उसके पीछे कृतज्ञता का भाव था। हम आज भी प्रकृति को पूजते हैं पर उसके पीछे का मूलभाव भूल गए हैं।

- विभाष उपाध्याय
उपाध्यक्ष, जन अभियान परिषद

प्रतिभागियों के विचार

2016-2017 में जब पहली बार नर्मदा समग्र संस्था और कार्यों के बारे में सुना तब बड़ी जिज्ञासा मिश्रित विस्मय हुआ की कोई संस्था ऐसी भी है जो नदियों एवं पर्यावरण पर इस स्तर तक चिंतन करती है। हमने बचपन से नदी एवं प्रकृति को देवी देवता के रूप में जाना है। नदी एक जीवमान ईकाई है ये चिंतन संस्था से जुड़ने के बाद ही ध्यान में आया। विगत 18-19 मई 2022 को म.प्र. विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी परिषद् भोपाल के परिसर में केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री माननीय श्री प्रहलाद जी पटेल , प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री एवं विषय विशेषज्ञो के सानिध्य में संपन्न हुआ। जैसा की नदी उत्सव का विषय 'खेती किसानी-नदी की जुबानी' अपने विषय अनुरूप विषय विशेषज्ञों के अनुभव कथन और विषय पर पकड़ के चलते सार्थकता के साथ संपन्न हुआ। दो दिवसीय आयोजन में ध्यान में आता है की नदी संरक्षण एवं संवर्धन में नदियों के किनारे खेती के वर्तमान तौर तरीके बदलने की महती आवश्यकता है। वर्तमान खेती पद्धति (रासायनिक) के दुष्परिणाम से पूरी दुनिया परिचत भी है और अधिकांश लोग दुष्परिणाम भी भोग रहे है, जो की नदी स्वास्थ्य के साथ साथ आम जन जीवन के स्वास्थ्य से सीधा जुड़ा हुआ विषय भी है। जैविक/ प्राकृतिक कृषि को कैसे बढ़ावा मिले, नदियों और प्रकृति के प्रति आम जन मानस का क्या कर्तव्य है, नदी उत्सव जैसे कार्यक्रमों से इन विषयों को सरलता से आम जन तक पहुँचाया जा सकता है। नदी एवं प्रकृति ऐसे विषय है यह समाज जागरण के विषय है जो की निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। पूर्ण विश्वास है की मैं से हम हम से सब तक की भाव जागरण यात्रा, समाज को जागृत करने का उपक्रम आने वाले समय में भी निर्बाध एवं और अधिक उत्साह और उर्जा के साथ नर्मदा समग्र न्यास के वरिष्ठ एवं अनुभवी संरक्षक मंडल एवं न्यासी सदस्यों के मार्गदर्शन में चलता रहेगा। इन्ही मंगलकामनाओं के साथ...

- अनुराग शर्मा, मालवा निमाड़ भाग

इस कार्यक्रम का अनुभव बहुत ही अच्छा रहा। इसमें कृषि से जुड़ी विभिन्न तकनीकों पर तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर सटीक जानकारी प्राप्त हुई। इसके अंतर्गत हमें प्राकृतिक कृषि तथा इससे जुड़ी हुई प्राचीन मान्यताओं एवं रूढ़ियों पर तथा प्राचीन विधियों पर ज्ञान प्राप्त हुआ। पर्यावरण को सहेजने के लिए आवश्यक जानकारी भी प्राप्त हुई। नर्मदा समग्र साथियों से मिलकर उनके निजी अनुभवों को भी परस्पर साझा किया गया। जिससे नई ऊर्जा का संचार हुआ तथा बहुत कुछ सीखने को मिला है। नदियों के संरक्षण के लिए सहायक नदियों पर भी कार्य करने की प्रेरणा मिली जिससे भविष्य में जल संकट या पर्यावरण नुकसान से बचा जा सकें। एक मायने में नदी उत्सव एक विशिष्ट वांछित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों पर केन्द्रित कार्यक्रम था जिसने सभी प्रतिभागियों में नवीन ऊर्जा का संचार हुआ। खेती किसानी नदी की जुबानी विषय को सम्पूर्ण रूप से परिभाषित किया है।

- उत्तम सिंह राजपूत, नर्मदापुरम भाग

जल के बिना सब शून्य है। हमें पर्यावरण को बचाने के लिए केमिकल का उपयोग नहीं करना चाहिए। जहां नदी नहीं होगी वहां मानव नहीं होगा। यह विषय हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा । रासायनिक खादों में जल प्रदूषित होता है। इन विषयो पर हमें स्वयं प्रयास करने होंगे, इसकी समझ बढ़ी । विषय विशेषज्ञों द्वारा जल संरक्षण पर अपने क्षेत्र में कैसे कार्य प्रारंभ किए जा सकते हैं इस पर भी अनेकों छोटे-छोटे उपाय बताएं गए। जिसने भारत भारती द्वारा एक पहाड़ी को हरा-भरा किया गया यह बहुत ही प्रेरणादायक था। नदी उत्सव हम सभी नदी अनुरागीयों के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत बना क्योंकि अलग-अलग स्थानों से आए कार्यकर्ताओं का अपना एक अनुभव था सभी ने अपने अनुभव के आधार पर अलग-अलग विषयों पर बात रखी जिससे हमें नई जानकारियां प्राप्त हुई।

- तरुण चंदेल, महाकौशल भाग

नदी महोत्सव बांद्राभान होशंगाबाद के बारे में काफी सुना था कभी जाने का अवसर प्राप्त नहीं हो पाया इस बार भोपाल नदी उत्सव में जाने का अवसर प्राप्त हुआ । नदी उत्सव में आए विषय विशेषज्ञों द्वारा जल एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में किए जा रहे कार्यों का चल चित्र के माध्यम से उल्लेख किया गया। खेती किसानी नदी की जुबानी इस विषय पर पहली बार हमारी यह समझ बढ़ी की नदी के किनारे खेती कर रहे किसानों के द्वारा जिस तरह से कीटनाशकों का प्रयोग किया जा रहा है वह बाद में वर्षा जल के माध्यम से नदियों तक पहुंच रहा है जिससे नदियों को अत्यधिक नुकसान हो रहा है। पूर्व में हमारे पूर्वज जैविक खेती किया करते थे परंतु इस आधुनिक समय में अधिक उत्पादन के कारण हमने जहरीली दवाइयां डालकर अपने खेतों को बर्बाद कर लिया है साथ ही जल संरक्षण की दिशा में चाहे वह रेन वाटर हार्वेस्टिंग हो या बड़ी संख्या में पौधारोपण की आवश्यकता हो यह एक बड़ी पहल नर्मदा समग्र के द्वारा मध्य प्रदेश के 16जिलों में की जा रही है इसका दर्शन हमें नदी उत्सव में जाने के बाद देखने को मिला। नदियों एवं पर्यावरण पर इस स्तर तक चिंतन समय समय मे होता रहना चाहिए ताकि हमारे जैसे कार्यकर्ताओ को आगे कार्य करने की ऊर्जा मिलती रहे ।

- योगेश झारिया, महाकौशल भाग

श्रद्धेय अनिल माधव दवे जी की पांचवी पुण्य तिथि के अवसर पर आयोजित भजन संध्या की झलकियाँ

नर्मदा अंचल के वृक्ष - सलई, सुगंधित गोंद वाला वृक्ष

वानस्पतिक नाम - Boswellia serrata

फैमिली - बर्सीवेसी

डॉ. सुदेश वाघमारे

कैसे पहचानें

यह एक पर्णवाती वृक्ष है जो अनुकूल परिस्थितियों में 15 मीटर लम्बाई तक पहुंच जाता है। इसकी छाल पतली, राख के रंग की, पपड़ियों के रूप में निकलती हुई होती है। जब तने या शाखाओं पर कट लगे होते हैं तो उनसे गोंद जैसे पदार्थ निकलता है जो रेजिन (ह्द्रह्यद्बठ्ठ) है। इसका छत्र चारों ओर फैला हुआ होता है। पत्तियां शाखाओं के अन्त में गुच्छे के रूप में पाई जाती हैं। पत्तियां 25-45 सेमी. लम्बी और 15-30 पत्रकों वाली होती हैं, जो इस पेड़ की प्रमुख पहचान हैं। ये पत्तियां शाखाओं पर एकान्तर लगती हैं।

पुष्प एवं फल

सफेद और 15 सेमी लम्बा पेनिकल होता है। पुष्प फरवरी से अप्रैल में तथा फल मई-जून में पकते हैं। जब फल आना प्रारंभ होते हैं तो उसके पहले पत्तियां पीली होकर गिर जाती हैं। नई पत्तियां वर्षा के पूर्व मई-जून में आ जाती हैं। पत्तियों का सीमान्त दन्तुर होता है इसलिए आसानी से पहचान में आती हैं।

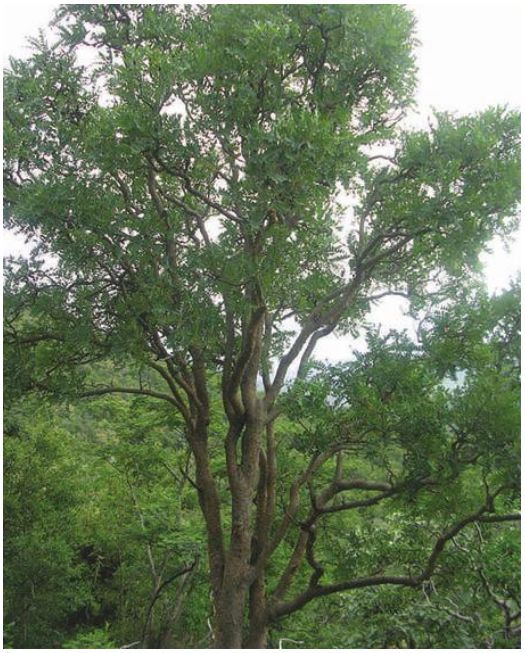

इसका वानस्पतिक नाम इसमें पाये जाने वाले सक्रिय तत्व बास्वोंलक अम्ल तथा पत्तियां दन्तुर (सीरेट) होने के कारण रखा गया है जो लेटिन भाषा में है। नर्मदा तट पर यह पहाड़ों की ढ़लानों पर पाया जाता है। पहाड़ियों को हरा-भरा करने के लिए उत्तम वृक्ष हैं। वर्षा पूर्व अ%छा गड्ढ़ा कर कटिंग लगाने से भी भलीभांति आ जाता है। इससे निकलने वाली गोंद (ओलियो रेजिन)जलाने पर सुगन्ध देती है। इसके धुंवे से गठिया एवं जोड़ों के दर्द का उपचार किये जाने का विधन है। इस गोंद का उपयोग दर्द एवं सूजन कम करने, मूत्र रोगों एवं पाचन समस्याओं में भी किया जाता हरा है। लकड़ी हल्की होने से पैकिंग केस बनाने में उपयोगी है। नर्मदा के तटों पर ढ़लान वाले क्षेत्रों में लगाने के लिए यह उपयुक्त वृक्ष हैं। गोंद का मूल्य बाजार में अ%छा मिलता है, अतः खेत की मेड़ों, खलिहानों और बंजर भूमि में लगाया जा सकता है।

सेटी इसकी छाल खाकर और सुअर इसकी जड़ खाकर क्षति पहुंचाता है अतः प्रारंभिक अवस्था में इसकी रक्षा आवश्यक है। कई क्षेत्रों में वनवासी स्वयं रूचि लेकर इसकी कटिंग लगाते हैं, क्योंकि मूल्यवान गोंद प्राप्त होती है। इसलिए इसके वृक्षारोपण को बढ़ावा देना चाहिए।

नर्मदा के जंगल

जंगल नर्मदा का श्वसन तंत्र है। नर्मदा इनसे प्राणवायु (जल) लेती है। बादल वर्षा बन इन वनों पर बरसते हैं। जल पेड़ों से पहाड़ों में चला जाता है। वर्ष भर यही जल रिस-रिसकर नर्मदा में आता है। साल, सागौन, अंजन, पलाश, खैर, बाँस, धावड़ा, अचार, नीम, अर्जुन जैसे वृक्ष और कई प्राचीन औषधीय पौधों से पूरा क्षेत्र भरा है। इस क्षेत्र में 262 औषधीय पौधों की प्रजातियाँ उपलब्ध हैं। नर्मदा क्षेत्र के जंगल वन्य जीव-विविधता से भरपूर हैं। इस क्षेत्र में तीन राष्ट्रीय उद्यान तथा नौ वन्य प्राणी अभयारण्य हैं, जो जीवों को संरक्षित करने के लिए बनाये गये हैं किन्तु आज वनों की अंधाधुंध कटाई से यह जल तंत्र संकट में आ गया है। इसका संरक्षण नहीं हुआ तो आने वाले 10-20 वर्षों में नर्मदा में जल का प्रतिशत इतना कम हो जायेगा कि लोग स्थान-स्थान पर उसे पैदल पार करने लगेंगे। इस क्षेत्र में शेर, तेंदुआ, मरूस्थली बिलाव, रीछ, चिंकारा, भेड़िया, मोर, चीतल, साँभर इत्यादि की कभी भरमार थी, जो अब अल्प मात्रा में है और उनमें से कुछ तो विलुप्त होने की कगार पर है।

साभार - नर्मदा समग्र (Rafting Through a Civilization : A Travel Logue)

मेकलसुता की
सेवा भावी नारी शशिबेन जोशी

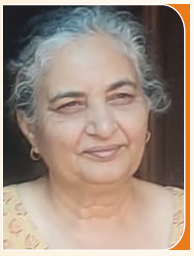

सुश्री ज्योति पंड्या
(लेखक -मंगलेश्वर, भरूच, गुजरात से हैं।)

पूज्य शशि बेन का जन्म शुक्लतीर्थ से 2 कि.मी. दूर भडोच (भरूच) जिले में प्रख्यात तीर्थ कबीर बंड़ के सामने पुण्य सलिला नर्मदा के उत्तर तट पर स्थित मंगलेश्वर में पिता अनुपम जोशी और माता ललिता बा के घर 1935 में हुआ था। जन्म के समय दैदिप्यमान रूप देखकर माँ भाव विभोर हो गई और उसका नाम सरस्वती रखा, परन्तु मैकलसुता माँ नर्मदा के तट पर शशिबेन के नाम से विख्यात हुई। बचपन से ही वे सेवाभावी, उत्साही, धर्मप्रिय एवं परोपकारी थी। बुजुर्गों के प्रति सम्मान का भाव रखते हुए उनकी आज्ञा को वह हमेशा शिरोधार्य रखती थी। सत्यवादिता एवं वचनबद्धता को उसने अपने जीवन में चरितार्थ किया। उन्होंने इस दोहे को जीवन का सूत्र माना -

''परहित बस जिनके मन माही।
तिन्ह कह जग दुर्लभ कछु नाहीं।।''
'परहित सरिस धरमनहि भाई। पर पीड़ा सम नहि अधमाई।'
'जो सहि दुःख पर छिद्र दुरावा। वंदनीय जिहि जग जस चावा।।'

शशि बहन बचपन से ही वह सेवारत होने का सपना देखती थी, वे भगवान से प्रार्थना करती थी कि मेरा जीवन दीन-दुखियों की प्यास बुझाने वाला झरना बने, मेरे प्रभु मुझे इसके लिये शक्ति देना भक्ति देना। नौ साल की उम्र से ही उसने अपने सेवाकार्य का आरंभ किया था, जब वह 19 साल की थी तब परमात्मा ने उसकी अग्नि परीक्षा ली। अचानक उनकी 2 बहने और 2 भाई को चेचक के रोग ने घेर लिया। उन लोगों के पूरे शरीर में चेचक के बड़े-बड़े दाने निकल आये, शरीर में तिल रखने का भी जगह शेष नहीं बची। छः महीने तक वह रोग दूर नहीं हुआ, छः माह बाद 3 भाई बहिन तो अच्छे हो गये परन्तु एक बहिन के आँख की रोशनी चली गई। आँखों की रोशनी चली गई। आँखों की जगह गड्ढे रह गये, परिवार पर वज्रघात हुआ, जीवन और मृत्यु के बीच कितना कम अंतर होता है, उसका उसे ज्ञान हो गया था। उसी समय उसने बहन की सेवा में समर्पित हो जाने का निर्णय अपने माता-पिता को सुनाया, बेटी के इस निर्णय से माता-पिता दंग रह गये परन्तु अपनी बेटी के निर्णय को स्वीकार कर लिया।

उनका बचपन साधु-संतों के साथ बीता क्योंकि उनके माता-पिता माँ नम्रदा की परम भक्त थी, परिक्रमावासियों की सेवा करना अपना सौभाग्य समझते थे। घर पधारे परिक्रमावासी को भगवान मानते थे। उनके यहा सदाव्रत देने की परंपरा पीढ़ी पर पीढ़ी चली आ रही थी, इसलिए परिक्रमावासियों की सेवा का संस्कार शशि बहन को वशं परपरागत मिला। उसने पिता का सेवा कार्य चालू रखा। वह भी परिक्रमावासियों को सदाव्रत देती रही। बड़ी सुबह हो या कड़ी धूप कभी भी कोई परिक्रमावासी आ जाये जो तुरंत वह उनके लिये चाय बनाये, भोजन का समय हों या न हो व शीघ्र ही परिक्रमावासी के लिये भोजन का प्रबंध कर देती थी। यदि बे समय भी कोई परिक्रमावासी आ जाते तो भी कुछ ही देर में उनके लिये भोजन बना देती थी। आलस शब्द उनके शब्दकोश में नहीं था। कोई भी उनके घर से खाली नहीं गया और न तो भूखा-प्यासा रहा। उसे जो भी मिलता था उसमें से वह निःस्वार्थ, निश्चल, पवित्र प्यार से माँ नर्मदा के सेवकों की सेवा करती थी। उस सेवा कार्य के लिये उसने कभी भी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया। उसकी खुद की जमीन में स्वयं किसानी करती थी और उसमें से जो मिले उसी में से परिक्रमावासियों की सेवा करती रही। सिर्फ भोजन ही नहीं, चाय, कपड़े, बर्तन जिस चीज की जरूरत हो उसमें से जो उसके पास हो वह चीज उन्हें देती रही।

सेवा, त्याग, प्रेम भावना, ममता जैसे सद्गुणों का वह जीवंत उदाहरण थी। लाभ-हानि, मोह-माया, मान-अपमान, यश-अपयश जैसे सांसारिक तत्वों से परे थी। समाज में रहकर भी वह परमहंस थी। सेवा करते हुय उनके शरीर में कुछ बीमारियाँ घर कर गई, पर ये बात किसी को नहीं बताई, असमय शशि बहन का स्वर्गवास (देवलोकगमन) हो गया। उनके स्वर्गवास की बात सुनकर उनके संपर्क में आने वाले हर परिक्रमावासियों को अपने स्वजन की मृत्यु जैसा आघात लगा। सभी ने उनको भावपूर्ण श्रद्धांजलि सुमन अर्पित किये। धन्य है वो परिक्रमावासी जिन्होंने शशि बहन की सेवा और स्नेह अपने जीवन में प्राप्त किया। सभी के मुंह में से शशि बहन के लिये भावपूर्ण शब्द निकल गये। 'न भूतो, न भविष्यति।' अर्थात ऐसी शशि बहन जैसा न पहले कभी हुआ है न होंगे। रिश्ता खून से नहीं प्यार और अपनेपन से होता है यही बात उन्होंने संसार को समझाई है। हम जितना प्यार बाटेंगे उनसे ज्यादा प्यार हमें मिलेगा यह बात उन्होंने अपने जीवन में चरितार्थ की। आज भी पूज्या शशि बहन उनके सेवाकार्यों के द्वारा हमारे बीच अमर है। □

विश्व पर्यावरण दिवस के पचास वर्ष

पर्यावरण कितना बेहतर, कितना बदतर

कई अमरीकी और यूरोपीय कंपनियाँ वहाँ खपत होने वाली वस्तुओं की पूर्ति के लिए चीन, भारत, बंग्लादेश, इंडोनेशिया और श्रीलंका इत्यादि देशों में उत्पादन करती हैं। तीसरी दुनिया में बढ़ती हुई उत्सर्जन और प्रदूषण का यह एक प्रमुख कारण है।

अजय ज्ञा

(लेखक - जलवायु परिवर्तन विशेषज्ञ, निदेशक पब्लिक एडवोकेसी इनिशिएटिव्स फॉर राइट्स एंड वेल्यूज इन इंडिया, नई दिल्ली हैं।)

5 जून 2022 को हर वर्ष की तरह विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। पर्यावरण दिवस मनाने की प्रथा 1972 में शुरू हुई थी जब स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण की वैश्विक बैठक के सफल आयोजन पर राष्ट्रसंघ की आमसभा मे हरेक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाना तय किया । स्टॉकहोम की बैठक की थीम केवल एक दुनिया (only one world) थी। इस वर्ष भी पर्यावरण दिवस की थीम केवल एक दुनिया ही थी। इस वर्ष स्टॉकहोम बैठक की पचासवीं सालगिरह मनाने के लिए स्टॉकहोम में STOCKHOLM +50 के नाम से महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय बैठक आयोजित की गई जिसमें दुनिया के कई देशों ने हिस्सा लिया और पर्यावरण के कई पहलुओं पर अपनी हिंता जताई।

यह बेहद दुःखद है कि 50 वर्ष पहले पर्यावरण पर जो चिंता थी वह आज भी उतनी ही बड़ी चिंता है। ऐसा नहीं है कि 50 वर्षों में पर्यावरण में कुछ भी सुधार नहीं हुआ। दुनिया के कई देश (खासकर विकसित देश) जहाँ 50 वर्ष पहले प्रदूषित हवा और प्रदूषित नदियाँ पर्यावरण संबंधी मुख्य चिंता का विषय थे, वह पहले से कहीं बेहतर है। लेकिन यह बात तीसरी दुनिया के बारे में नहीं कही जा सकती। दरअसल पिछले पचास सालों में विकसित देशों ने अपने यहाँ प्रदूषण कम करके तीसरी दुनिया के देशों को कारखाने में तब्दील कर दिया है। कई अमरीकी और यूरोपीय कंपनियाँ वहाँ खपत होने वाली वस्तुओं की पूर्ति के लिए चीन, भारत, बंग्लादेश, इंडोनेशिया और श्रीलंका इत्यादि देशों में उत्पादन करती हैं। तीसरी दुनिया में बढ़ती हुई उत्सर्जन और प्रदूषण का यह एक प्रमुख कारण है।

1972 की स्टॉकहोम की बैठक ने दुनिया का ध्यान पर्यावरण क्षरण पर लाया जिसके फलस्वरूप कई देशों ने पर्यावरण को बेहतर करने का प्रयास किया। इस बैठक के बाद राष्ट्रसंघ पर्यावरण कार्यक्रम की स्थापना भी की गई। 1972 से पहले किसी भी देश में पर्यावरण मंत्रालय नहीं था, सम्मेलन के बाद सरकारों ने पर्यावरण मंत्रालय स्थापित किए जाने लगे। पर्यावरण कार्यक्रम ने 50 वर्षों में पर्यावरण पर जागरूकता और नीति बनाने पर गहन काम किया। इस दौरान 500 से भी ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय संधियाँ की गई। इन वर्षों में ओजोन छिद्र को भरने, कई घातक रसायनों का प्रयोग खत्म करने और यातायात ईंधन में शीशे का उपयोग बंद करने में इसकी महती भूमिका रही। हालांकि पर्यावरण की चिंता को अर्थव्यवस्था के स्तर पर लाने में यह अभी भी जूझ रहा है। यह इस बात से स्पष्ट है कि पर्यावरण पर इतनी चर्चा के बाद भी वैश्विक पर्यावरण की बैठक राष्ट्राध्यक्षों के स्तर पर अभी भी नहीं होती है। दुनिया की राजनीति में पर्यावरण को अभी भी (अर्थव्यवस्था के बाद) दोयम दर्जे का ही महत्व दिया जाता है। पर्यावरण कार्यक्रम अभी भी राष्ट्रसंघ की आमसभा का एक कार्यक्रम मात्र है, न कि एक स्वतंत्र एजेंसी। इससे पर्यावरण कार्यक्रम के महत्व व सरकारों पर इसके प्रभाव पर सीधा असर पड़ता है।

पिछले पचास वर्षों में दुनिया की आबादी दुगनी हुई है, प्राकृतिक संसाधन का दोहन तीन गुना बढ़ा है, वैश्विक अर्थव्यवस्था 5 गुना बढ़ा है और विश्व व्यापार में 10 गुना

जलवायु के संकट को इस शताब्दी का सबसे बड़ा संकट माना जा रहा है। वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों (खासकर कार्बन डायऑक्साइड और मिथेन) की सघनता बढ़ने से मौसम चक्र में बदलाव, तापमान में वृद्धि, समुद्र तल के स्तर का ऊपर आना, मरुस्थलीकरण, समुद्रों में सांद्रीकरण, और बाढ़, सुखाड़, चक्रवात, गर्म हवा की बारंबारता के प्रभाव क्षेत्र और बढ़ते हुए दुष्प्रभाव से दुनिया का हरेक हिस्सा ग्रस्त है।

वृद्धि हुई है। इसके साथ ही वायु प्रदूषण, प्लास्टिक प्रदूषण, जैव विविधता में कमी और जलवायु इत्यादि का संकट कई गुना बढ़ा है। निकट भविष्य में इनके समाधान की अपेक्षा शायद ही की जा सकती है। दुनिया में 90 लाख लोग वायु प्रदूषण जनित कारणों से मृत्यु को प्राप्त होते हैं और सिर्फ 8 प्रतिशत लोगों को साफ और स्वच्छ हवा उपलब्ध है। दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में वायु प्रदूषण की बड़ी समस्या है लेकिन दक्षिण एशिया में स्थिति और भी बदतर है जहाँ 30 में से 21 सर्वाधिक प्रदूषित शहर है। अकेले भारत में वायु प्रदूषण जनित कारणों से प्रतिवर्ष तकरीबन 12 लाख मौतें होती है। पिछले पचास वर्षों में प्लास्टिक का उत्पादन तकरीबन 7 गुना बढ़ा है। हम हरेक वर्ष करीब 1 करोड़ टन प्लास्टिक समुद्र में फेंक रहे हैं जो कि आने वाले कुछ दशकों में 9 करोड़ टन तक बढ़ जाने की संभावना है। एशिया महाद्वीप में ही पूरी दुनिया का आधा से अधिक प्लास्टिक उत्पादन होता है। प्लास्टिक से न सिर्फ समुद्री पारिस्थिति तंत्र बल्कि मानव स्वास्थ्य और समुद्री उत्पादन पर आधारित देशों की अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा है। मानवों की रक्त प्रणाली में अब महीन प्लास्टिक का पाया जाना आम बात है। जैव-विविधता में लगातार होती हुई कमी एक घोर पर्यावरणीय संकट इंगित करता है। दुनियाभर में पाए जाने वाले 70 लाख पुष्प, पादप और जंतुओं में से 10 लाख लुप्त होने की कगार पर हैं। इससे सबसे बड़ा खतरा खाद्य उत्पादन पर अपेक्षित है। इन बससे बड़ा संकट जलवायु परिवर्तन का है। जलवायु के संकट को इस शताब्दी का सबसे बड़ा संकट माना जा रहा है। वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों (खासकर कार्बन डायऑक्साइड और मिथेन) की सघनता बढ़ने से मौसम चक्र में बदलाव, तापमान में वृद्धि, समुद्र तल के स्तर का ऊपर आना, मरुस्थलीकरण, समुद्रों में सांद्रीकरण, और बाढ़, सुखाड़, चक्रवात, गर्म हवा की बारंबारता के प्रभाव क्षेत्र और बढ़ते हुए दुष्प्रभाव से दुनिया का हरेक हिस्सा ग्रस्त है। कई वर्षों के प्रयास के बद तय हुई पेरिस संधि जिसमें देशों ने बढ़ते हुए तापमान को 1.5 डिग्री या 2 डिग्री सेल्सियस से कम पर रोकने की प्रतिबद्धता व्यक्त की थी, के लक्ष्यों को पाना दुरूह लगता है। हालिया वैज्ञानिक रिपोर्ट (WMO, 2022) की मानें तो दुनिया का तापमान 2025 तक ही कम से कम एक साल के लिए 1.5 डिग्री से अधिक जाने की 50 प्रतिशत संभावना है। 2015 में यह संभावना शून्य थी। 1.5 डिग्री के लक्ष्य का पाने के लिए पूरी दुनिया के उत्सर्जन में 2025 के बाद से ही कमी और 2030 तक 43 प्रतिशत कमी की आवश्यकता है।

कोविड महामारी के दौरान जब सारी दुनिया ठप पड़ी थी, 2020 में उत्सर्जन में सिर्फ 5.4 प्रतिशत की कमी आई। 1.5 डिग्री का लक्ष्य हासिल करने के लिए यह कमी 8साल तक लगातार बनाए रहना होगा। गैर पारंपरिक और अक्षय ऊर्जा में वृद्धि के बावजूद यह लक्ष्य मुश्किल लगता है। यह अब तक असंभव है जब तक धनी और औद्योगीकृत देश गरीब एवं विकासशील देशों के साथ अपना आर्थिक संसाधन और तकनीक साझा नहीं करते हैं और दुनिया की राजनीतिक शक्ति संरचना और संबंध में छोटे व देशों की सामाजिक, आर्थिक व पर्यावरणीय आवश्यकताओं को भी तरजीह नहीं देते हैं।□

पॉलीथिन बंधन क्यों ?

'ईको ब्रिक' जन जन अभियान से जुड़कर कैसे हम सही अर्थों में धरती का वंदन कर सकते है?

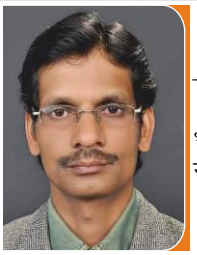

डॉ. अनिल मेहता

(लेखक - प्रिंसिपल विद्या भवन पॉलिटेक्निक उदयपुर, संयुक्त सचिव झील संरक्षण समिति, राजस्थान।)

सतही फैलाव को न्यूनतम करना

जब हम सिंगल यूज़ प्लास्टिक, विशेषकर पॉलीथिन, पाउच इत्यादि को जब एक लीटर की प्लास्टिक की ही बोतल में भर देते है तो हम 100 वर्गफीट क्षेत्रफल धरती सतह पर या किसी जल स्त्रोत में फैल जाने वाले पॉलीथिन कचरे को मात्र 0.75 वर्गफीट सतही क्षेत्रफल में बंद करते है। एक लीटर की बोतल का सतही क्षेत्रफल लगभग पौन वर्गफीट होता है।

जब खुले में पॉलीथिन फैलता है तो उसकी ज्यादा सतह (सरफेस एरिया) सूर्य व वातावरण के संपर्क में आती है। और यह भूमि, वायु, सतही व भूजल सभी के लिए प्रदूषण (पॉल्युशन, कॉंटेमिनेशन) का प्रमुख कारण बन जाता है।

पॉलीथीन में जहरीले व विषैले रसायन है

पॉलीथिन का मूल घटक पेट्रोलियम उत्पाद है। पॉलीथिन को लचीला (फ्लेक्सिबल), खींच सकने वाला (स्ट्रेचेबल), अधिक समय तक काम में आ सकने वाला (ड्यूरेबल), मजबूत, पारदर्शी या रंगीन बनाने एवं इसके सम्पूर्ण प्रदर्शन (परफॉर्मेंस) को अच्छा बनाने, मुलायम, चिकना हो और अधिक वजन से टूटे नहीं, इसी प्रकार की कई विशेषताओं (फंक्शनल प्रॉपर्टीज) को विकसित करने के लिए पॉलीथिन की निर्माण प्रक्रिया के दौरान इसमे कई कार्बनिक व अकार्बनिक रसायन मिलाए जाते है। इनमें थेलेट्स, कैडमियम, कोबाल्ट, क्रोमियम, लेड, बीपीए सहित विविध प्रकार के दर्जनों विषैले (टॉक्सिक) रसायन सम्मिलित है।

यद्यपि पॉलीथिन नॉन बायो डिग्रेडेबल है अर्थात जैविक रूप से विघटित नही होता लेकिन यह फोटोडिग्रेडेबल अर्थात सूर्य किरणों, ताप व अन्य वातावरणीय कारकों से इसका हानिकारक रूप में विघटन होता है।इसमें उपस्थित विषैले रसायन पिघल कर (लीच होकर) मिट्टी व पानी में चले जाते है।

भूमि , जल, पौधों, अनाज व फलो को विषाक्त करता है पॉलीथिन

पॉलीथिन अत्यंत ही बारीक कणों में टूट जाता है जिन्हें माइक्रो प्लास्टिक व नेनो प्लास्टिक कहते है। इनका माप एक मिलीमीटर के एक हजारवें से लेकर दस लाखवें भाग जितना महीन होता है। खुले मे विसर्जित पोलेथिन के विषैले रसायन व माइक्रो प्लास्टिक- नेनो प्लास्टिक कण मृदा, मिट्टी (सॉइल) की उपजाऊपन सरंचना, पोषक तत्वों का प्रवाह, लाभदायक मृदा जीवाणुओं की संख्या व गतिविधि सहित मृदा की मूल प्रकृति को तहस नहस करते है।

ये विषैले तत्व व कण पौधों की जड़ों द्वारा अवशोषित कर लिए जाते है। यही कारण है कि अनाज से लेकर फलों, सब्जियों में अब पॉलीथिन रसायनों का संदूषण है एवं इनमें माइक्रोप्लास्टिक है।

पशु व जीवो में जा रहा है जहर

खुले में विसर्जित होने पर इन्हें पशु खा लेते है। जो पशुओं को बीमार तो करते ही है, उनसे मिलने वाले खाद्य पदार्थ गंभीर रूप से संदूषित (कोंटामिनेटेड) होते है। इस दृष्टि से निरामिष व सामिष, शाक व मांस दोनों प्रकार के खाद्य पदार्थ जहरीले हो गए है। गाय के दूध से लेकर प्रसूताओं के दूध सभी मे पॉलीथिन का संदूषण है।

जल व जलीय जीवो में विषाक्तता

जल स्त्रोत- कुंवो, बावड़ियों, नलकूप, पोखर, तालाब, नदी में जाकर

पॉलीथिन के विषैले रसायन व माइक्रोप्लास्टिक कण पानी को प्रदूषित करते है। इससे मछलियों व अन्य जलचरों व जलीय वनस्पति में पॉलीथिन रसायन की मात्रा खतरनाक स्तर तक होती जा रही है।

मनुष्यों के लिए भी विषैला है पॉलीथिन

इस प्रकार के जल को पीने से यह समस्त विषैले रसायन व माइक्रोप्लास्टिक कण हमारे शरीर मे जमा हो रहे है।

ये रसायन लिवर, किडनी, पेट के लिए तो कैंसरकारी व मस्तिष्क रोगों के कारक तो है ही, मुख्यतया इनका दुष्प्रभाव पुरुषों व महिलाओं की प्रजनन प्रणाली (रिप्रोडक्टिव सिस्टम), अन्तःस्त्रावी ग्रंथि प्रणाली (एंडोक्राइन ग्लैंड सिस्टम) व स्नायु तंत्र (नर्वस सिस्टम) पर पड़ता हैं। ये विषैले रसायन एस्ट्रोजन एक्टिव व एंडोक्राइन डिसरप्टर है। ये हमारे शरीर की प्राकृतिक हॉरमोन व्यवस्था पर दुष्प्रभाव डालते है। फलतः नपुसंकता, बांझपन, जननांगों में विकृति, स्तन, गर्भाशय व प्रोस्टेट के कैंसर, बालिकाओं में जल्दी मासिक धर्म आना, किशोरों - युवाओं में अति सक्रियता व मादाओं जैसे लक्षण, थायरोइड संबंधी व डायबिटीज बीमारियां आम हो गई है। माइक्रोप्लास्टिक व नेनो प्लास्टिक हमारे श्वसन द्वारा भी शरीर मे प्रवेश कर श्वसन संबंधी रोग पैदा कर रहे है।

ईकोब्रिक पर जिज्ञासाएं व प्रश्न

- हम आपसी बातचीत में बहुधा कहते है कि ईकोब्रिक बनाकर पॉलीथिन के दैत्य को एक बोतल में बंद करना है। आखिर क्यों हम पॉलीथिन की तुलना किसी दैत्य या राक्षस से कर रहे है ?
- ईकोब्रिक में पॉलीथिन बंधन से कैसे पर्यावरण, प्रकृति, मानव समाज और सम्पूर्ण चराचर जगत की रक्षा हो सकती है ?
- पोलीथिन बंधन - धरती वंदन इस उद्घोष, इस स्लोगन के विज्ञानीय निहितार्थ क्या है ?

जलवायु परिवर्तन संकट को बढ़ाता है पॉलीथिन

यही नही, खुले में विसर्जित हुए पॉलीथिन प्लास्टिक से कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोक्साइड, मीथेन, इथाइलीन, प्रोपेन सहित कई विषैली गैसे निकलती है। ये जलवायु परिवर्तन संकट को और बढ़ाती है व मानव स्वास्थ्य के लिए जहरीली है। जब कचरा स्थलों पर पॉलीथिन अन्य कचरे के साथ जलता है तो फ़्यूरेन, डाईओक्सिन सहित कई विषैली गैस बनती है जो ऊपर वर्णित समस्त रोगों की तीव्रता को बढ़ाती है।

ये विषैली गैसे वनस्पति - पेड़ पौधों को भी गंभीर हानि पहुँचाती है।पॉलीथिन खुली नालियों, सीवर में जमा होकर प्रवाह को बाधित करती है । जमा गंदगी से मच्छरों की समस्या बढ़ बीमारियां बढ़ती है। और, इससे विभिन्न प्रकार की पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक समस्याएं पैदा हो रही है।

ईकोब्रिक है सरल व प्रभावी समाधान

मानव समाज, वनस्पति जगत , जीव जगत सहित सम्पूर्ण प्रकृति के लिए संकटकारी इन समस्त समस्याओं का समाधान है कि हम पॉलीथिन कचरे को एक बोतल में बंद कर ईकोब्रिक बनाये। और फिर इस ईकोब्रिक का कोई रचनात्मक, उत्पादक (प्रोडक्टिव) उपयोग करे। दीवार, फुटपाथ, गमले, कचरा पात्र, फर्नीचर से लेकर सड़क निर्माण व सीमेंट निर्माण संयंत्रों की भट्टियों में इकोब्रिक का उपयोग किया जा सकता है। इकोब्रिक से बनी सड़क ज्यादा मजबूत व ड्यूरेबल होती है।

आह्वान

आइए, कचरा पृथकीकरण (सेग्रिगेशन) को घर घर के स्तर पर प्रारम्भ करते हुए, ईकोब्रिक अभियान से जुड़े। ईकोब्रिक अभियान 5 आर (5R) का प्रत्यक्ष व व्यावहारिक प्रयोग है। इससे हम पॉलीथिन कचरे की समस्या का रिड्यूस, रिसायकल, रिफ्यूज़, रिन्यूअल व रियूज़ , इन पांच आयामो से समाधान कर प्रकृति वंदन - धरती वंदन - मानवता वंदन कर पाएंगे। □

एकल उपयोग वाली प्लास्टिक (SUP) पर प्रतिबंध

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 2022 तक एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं को समाप्त करने के लिए दिए गए स्पष्ट आह्वान के अनुरूप, भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने 12 अगस्त 2021 को प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम, 2021 को अधिसूचित किया। 'आजादी का अमृत महोत्सव' की भावना को आगे बढ़ाते हुए, देश द्वारा कूड़े एवं अप्रबंधित प्लास्टिक कचरे से होने वाले प्रदूषण को रोकने के उद्देश्य से एक निर्णायक कदम उठाया जा रहा है। भारत 1 जुलाई, 2022 से पूरे देश में चिन्हित एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं, जिनकी उपयोगिता कम और प्रदूषण क्षमता अधिक है, के निर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध लगाएगा।

समुद्री पर्यावरण सहित स्थलीय और जलीय इकोसिस्टम पर एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं के प्रतिकूल प्रभावों को वैश्विक स्तर पर पहचाना गया है। एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं के कारण होने वाले प्रदूषण को दूर करना सभी देशों के लिए एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय चुनौती बन गया है।

2019 में आयोजित चौथी संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा में, भारत ने एकल उपयोग वाले प्लास्टिक उत्पादों के प्रदूषण से निपटने के लिए एक प्रस्ताव रखा था, जिसमें वैश्विक समुदाय द्वारा इस बहुत महत्वपूर्ण मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करने की तत्काल आवश्यकता को स्वीकार किया गया था। यूएनईए 4 में इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया जाना एक महत्वपूर्ण कदम था। मार्च 2022 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा के हाल ही में संपन्न पांचवें सत्र में, भारत प्लास्टिक प्रदूषण के खिलाफ वैश्विक स्तर पर कार्रवाई शुरू करने के संकल्प पर आम सहमति विकसित करने के लिए सभी सदस्य देशों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ा।

भारत सरकार ने सिंगल यूज प्लास्टिक से उत्पन्न कचरे से होने वाले प्रदूषण को कम करने के लिए ठोस कदम उठाए हैं। प्रतिबंधित वस्तुओं की सूची में ये वस्तुएं शामिल हैं- प्लास्टिक स्टिक वाले ईयर बड, गुब्बारों के लिए प्लास्टिक स्टिक, प्लास्टिक के झंडे, कैंडी स्टिक, आइसक्रीम स्टिक, सजावट के लिए पॉलीस्टाइनिन (थर्माकोल), प्लास्टिक की प्लेट, कप, गिलास, कटलरी, कांटे, चम्मच, चाकू, स्ट्रॉ, ट्रे, मिठाई के डिब्बों को रैप या पैक करने वाली फिल्म, निमंत्रण कार्ड, सिगरेट के पैकेट, 100 माइक्रोन से कम के प्लास्टिक या पीवीसी बैनर, स्टिरर।

> **प्रतिबंधित एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं के अवैध निर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री और उपयोग पर रोक लगाने के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर नियंत्रण कक्ष स्थापित किए जायेंगे।**
>
> **सभी हितधारकों द्वारा प्रभावी भागीदारी और ठोस कार्रवाई के माध्यम से ही इस प्रतिबंध की सफलता संभव है।**

प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम 2021 के अंतर्गत 75 माइक्रोन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक कैरी बैग के निर्माण, आयात, संग्रहण, वितरण, बिक्री और उपयोग पर 30 सितंबर 2021 से और 120 माइक्रोन से कम मोटाई वाले इस सामान पर 31 दिसंबर, 2022 से प्रतिबंध लगाया गया है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने 16 फरवरी, 2022 को प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम, 2022 के रूप में प्लास्टिक पैकेजिंग पर विस्तारित उत्पादकों की जिम्मेदारी पर दिशा-निर्देशों को भी अधिसूचित किया है। विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (ईपीआर) दरअसल उत्पाद की शुरुआत से अंत तक उसके पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर प्रबंधन के लिए एक उत्पादक की जिम्मेदारी होती है। ये दिशा-निर्देश प्लास्टिक पैकेजिंग कचरे की चक्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने, प्लास्टिक पैकेजिंग के नए विकल्पों के विकास को बढ़ावा देने और कारोबारी जगत द्वारा टिकाऊ प्लास्टिक पैकेजिंग के विकास की दिशा में कदम बढ़ाने से संबंधित रूपरेखा मुहैया कराएंगे।

एमएसएमई इकाइयों के लिए क्षमता निर्माण कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है, ताकि उन्हें सीपीसीबी/एसपीसीबी/पीसीसी के साथ-साथ लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्यम मंत्रालय तथा केंद्रीय पेट्रोकेमिकल इंजीनियरिंग संस्थान (सीआईपीईटी) और उनके राज्य-केन्द्रों की भागीदारी के साथ प्रतिबंधित एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं के विकल्प के निर्माण के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की जा सके। ऐसे उद्यमों को प्रतिबंधित एकल उपयोग वाली प्लास्टिक के निर्माण को बंद करने में सहायता करने के भी प्रावधान किये गए हैं।

भारत सरकार ने नवाचार को बढ़ावा देने और पूरे देश में त्वरित पहुंच और विकल्पों की उपलब्धता के लिए एक इकोसिस्टम प्रदान करने के उद्देश्य से भी कदम उठाए हैं।

1 जुलाई 2022 से चिन्हित एसयूपी वस्तुओं पर प्रतिबंध को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय नियंत्रण कक्ष स्थापित किये जायेंगे तथा प्रतिबंधित एकल उपयोग प्लास्टिक के अवैध निर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री एवं उपयोग की निगरानी के लिए विशेष प्रवर्तन दल गठित किये जायेंगे। राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को किसी भी प्रतिबंधित एकल उपयोग वाली प्लास्टिक की वस्तुओं के अंतर-राज्य परिवहन को रोकने के लिए सीमा जांच केंद्र स्थापित करने के लिए कहा गया है।

सीपीसीबी शिकायत निवारण ऐप, नागरिकों को प्लास्टिक से जुड़ी समस्या से निपटने में मदद हेतु सशक्त बनाने के लिए शुरू किया गया है। जनता तक व्यापक पहुंच बनाने के लिए प्रकृति नाम के शुभंकर की भी 5 अप्रैल को शुरुआत की गई। सरकार एकल उपयोग वाली प्लास्टिक को समाप्त करने के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न उपाय कर रही है। जागरूकता अभियान में उद्यमियों और स्टार्ट अप्स, उद्योग, केंद्रीय, राज्य और स्थानीय सरकारें नियामक निकायों, विशेषज्ञों, नागरिक संगठनों, अनुसंधान एवं विकास और अकादमिक संस्थानों को एकजुट किया गया है। मंत्रालय का विश्वास है कि इस पाबंदी की सफलता तभी संभव है, जबकि सभी हितधारकों और उत्साही जन भागीदारों को इसमें प्रभावी रूप से शामिल किया जाए और वे सम्मिलित रूप से प्रयास करें। □

एक नमन मेरा भी - बहादुर

राम बहादुर थापा

(लेखक - नर्मदा समग्र के कार्यकर्ता हैं।)

श्रद्धेय अनिल दवे का सामाजिक-राजनीतिक और पारिवारिक व्यवहार एक आदर्श है। वह राजनैतिक जीवन में होते हुए भी अनुशासनप्रिय होने के साथ-साथ परिश्रमी, लगनशील, समय के पाबंद एवं अत्यन्त मितव्ययी भी थे। उन्होंने अपने राजनैतिक जीवन में परिवार से ज्यादा संगठन को समय दिया। वह एक आदर्श प्रचारक और कुशल राजनेता थे।

मैं उन्हें 1990 से जानता हूँ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक होने के कारण ही होगा की उनमें महत्वाकांक्षा रत्तिभर भी नहीं थी। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि उनकी इच्छायें महत्वकांक्षाएँ नहीं होगी। परन्तु अपने महत्वकांक्षाओं को उन्होंने अपने नैतिक बंधनों से बांध कर रखा था। समय-समय पर मैं उनकी लिए भोजन का प्रबंध करता तो यह नहीं पूछते थे कि आज क्या बना है। जैसा मिला सहज स्वीकार किया। हाँ बाद में उनको बीमारी के कारण वह मुझको सादा भोजन बनाने के लिए बोलते थे। उन्होंने हमेशा सकारात्मक भाव से कार्य किया और हम सब उनके साथ कार्य करने वालें लोगों को वह सहयोगी की भूमिका में रखते थे। पार्टी कार्यालय में कार्य करते हुए कई बार ऐसी परिस्थितयाँ भी निर्मित हुई जिसे उन्होंने सहज भाव से सुलझाया। कठिन से कठिन परिस्थितियों में डिगे नहीं और संबल बनकर उभरे।

श्रद्धेय अनिल माधव दवे में बड़े से बड़े और छोटे से छोटे कार्यकर्ता को संतुष्ट करने की महारत हासिल थी। आज के समय में राजनैतिक व्यक्ति को लोभ-लाभ, मोह-माया से दूर रहकर ही राजनीति में शूचिता लाई जा सकती है उनसे सिखने को मिला। श्री अनिल दवे जी पद के पीछे कभी नहीं भागे। आप सरल स्वभाव के ऐसे नेता रहे जिनसे पितृवत स्नेह मिलता रहा है। वे कार्यकर्ताओं के सच्चे मार्गदर्शक थे जो कभी-कभी मित्रवत भी आत्मीय चर्चा भी करते थे, तब कार्यकर्ता आत्मविभोर होकर अपने को भूल जाता था। आज की परिस्थितियों में राजनीति में श्री अनिल माधव दवे जी जैसे महान संघ के प्रचारक और राजनेता की कार्यकर्ताओं को महती जरूरत है। वे हमेशा पार्टी के लिए जिये। पार्टी को सशक्त और समर्थ बनाने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दी।

मुझे पूरा भरोसा है कि स्वर्गीय श्री अनिल माधव दवे जी के कार्यों और सद्गुणों के कारण अवश्य ही देव लोक में होंगे, मैं श्रद्धेय अनिल माधव दवे जी के श्रीचरणों में शत-शत नमन करता हूँ और उनके बताये मार्ग पर चलने का प्रण लेता हूँ। □

वार्षिक सदस्यता प्रपत्र

मैं ..... एक वर्ष के लिए नर्मदा समग्र त्रैमासिक पत्रिका की सदस्यता लेना चाहता/चाहती हूँ।

4 अंक - वार्षिक शुल्क 100 रूपये, (पोस्टल शुल्क सम्मिलित)

नाम : _____ लिंग : _____

कार्य : व्यवसाय ☐ कृषि ☐ नौकरी ☐ विद्यार्थी ☐ संगठन ☐

संस्था : _____ दायित्व/पद : _____

फोन : _____ मोबाइल : _____ ई-मेल : _____

पता : _____

जिला : _____ पिन कोड : _____ राज्य : _____

भुगतान विवरण : चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. : _____ दिनांक : _____ रूपये : _____

अदाकर्ता बैंक : _____ शाखा : _____

खाते की जानकारी (ऑन लाईन भुगतान हेतु)

Narmada Samagra
State Bank of India
Shivaji Nagar Branch, Bhopal, M.P.
Ac no. 30304495111
IFSC: SBIN0005798

दिनांक : _____ हस्ताक्षर : _____

"नदी का घर"
सीनियर एमआईजी -2, अंकुर कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, मध्यप्रदेश - 462016
दूरभाष + 91-755-2460754 ई-मेल : narmada.media@gmail.com

MPWLC

मध्यप्रदेश वेअरहाउसिंग
एण्ड
लॉजिस्टिक्स कॉर्पोरेशन

- ✓ पूरे प्रदेश में 8 क्षेत्रीय कार्यालयों के अधीन 280 शाखाओं पर 1532 गोदामों के माध्यम से 23.45 लाख मे.टन भंडारण क्षमता का संचालन |
- ✓ जमाकर्ताओ को उनकी सामग्री के वैज्ञानिक भण्डारण की सुविधा |
- ✓ वेअरहाउस रसीद की प्रतिभूति पर राष्ट्रीयकृत, वाणिज्यिक बैंक द्वारा ऋण की सुविधा |
- ✓ कृषकों को तथा अन्य जमाकर्ताओं को नियमान्तर्गत भंडारण शुल्क में सशर्त रियायत |
- ✓ बाह्य कीटनाशक विस्तार सेवा योजनांतर्गत निगम परिसर के बाहर भी कीट उपचार की सुविधा |
- ✓ निरंतर लाभ की स्थिति में |

M. P. WAREHOUSING & LOGISTICS CORPORATION

Office Complex, Block-A, Gautam Nagar, Bhopal 462023

Phone- 2600503, 0755-2600384, 2600505

Email- ho@mpwlc.co.in, Website- mpwarehousing.mp.gov.in

www.narmadasamagra.org RNI No. - MPHIN/2011/38276

श्रद्धेय अनिल दवे जी की पांचवी पुण्यतिथि (18 मई 2022)

"जो मेरी स्मृति में कुछ करना चाहते हैं, वे कृपया वृक्षों को बोने व
उन्हें संरक्षित कर बड़ा करने का कार्य करें,
तो मुझे आनंद होगा। वैसे ही नदी-जलाशयों के संरक्षण में
अपने सामर्थ्य अनुसार अधिकतम प्रयत्न भी किये जा सकते है।
ऐसा करते हुए भी मेरे नाम के प्रयोग से बचें।" वसीयत से ...

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2 अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित। संपादक कार्तिक सप्रे। फोन नं. : 0755-2460754